মূল্যঃ—অগ্রিম বাবিক ৬॥০, ডাক মাশুল ১॥০, বাথাসিক ৬৬০, ডাক মাশুল ৬০, ত্রেমাসিক ২।৯০, ডাক মাশুল ।৯০ আনা। অন্ত্রিম বার্বিক ৮॥০, ডাক মাশুল ১॥০৮ বিজ্ঞাপন প্রকাশের মূল্যঃ—প্রতি পাঁক্তি, প্রথম, দ্বিতীয় ও তৃতীয় বার ১০, চতুর্থ ও ততোধিকশার ৯০আন। ইংরেজী প্রতি পংক্তি।০আঃ

৭ম ভাগ

কলিকাতাঃ— ১৫ই আবণ গ্রুপাতিবার, সন ১২৮১ সাল। ইং ৩০ জুলাই

२० मश

# विख्वां शन। কলিকাতা वछ्वाङा विष्ठि । न ३२

बियुं इतिका ज भर्मात थां ज, पार्वालात गरहो यथ जात्नक श्रूबर उ सी भाजू (मिर्कला उ हे लिए स ला जा मर्वमा मन्द्र क्रिक् क्रिम् क्रिम् প্রকার চিকিৎসায় ফল প্রাপ্ত না হইয়া হতাপ্রাস হয়ে-

যাহারা এই ফ্রেমিধ গ্রহণে ইচ্ছা করেন তীহারা
পীড়ার অবস্থাবিস্তারিত রূপে লিখিবেন এবং ঔষধের मूला देणां पित न्या अथयण्ड ए श्राष्ठ छोको श्राष्ठी हैरवन दिगित नाम भाग जामानित्यत बादा श्रकारणत जामान्त्रा

ত্রীযুক্ত হরিশ্চন্দ্র শর্মার হেয়ার প্রিজারভার। নিয়ম মত কিছু দিন ব্যবহার করিলে যুবা ও মধ্য-वशक वाङि मिरशंत आंत खक्रवर्ग ठूल थाकिरवना। ठूल इरेटन।

ইহার প্রতি শিশিরের মূল্য ১ টাকা। ডাক ग । खल इंडा मि ॥० जाना।

হৈয়ার প্রিজারভার, হিমদাগার তৈল ও কুফ রোগোর তৈল, সুবিখ্যাত ভারতবর্ষীয় মঞ্জন, (tooth powder ) ক্ৰেবা ক্যাম্ফার নিম্ন লিখিত স্থানে পাওয়া যায়।

वल्वाकात ३२ नम्दत्र वाणि अतिद्याणेल अशिका।-রিশ হল, দাস সরকার এণ্ড কোন্সানির নিকট ও कोरलं अशोत 58 नम्रदंत वाणि ध्वर एएनर कालिक श्री हे कानिश लाश्खित्रिक शावा याश्या याश्या

शुक विक्रम ना हिक।

मः ऋ ७ यद्धित श्रीखकानात्र, श्रीनिष्मा ङ्क विद्वाञाषिरगंत निक्रे उ ७३ नः आगश्रे द्वीरे बालाफि यञ्जाल स्य विक्यार्थ श्रुख जाए । मूना एक ट्रोका, ডाक गांधल ०० छई आंगा। (3)

वार्शिय विक्या।

श्या जाग।

मुला। ० जाना। मश्कुल जिलेजिं ति ५५ वर करन ज थि है कार्गिनश्लाइ द्वति अ ३२ नश् वद्याकारत थाथया।

मश्कागक ज्दित्र ग्रही नश्

गङ्ख गङ्ख शहीका दाता धारे खेगरधत णान शही कि इहेशार्छ। छ्वाली ७ वर्कन श्राञ्चि गः कां मक जान श्राणि एक (कानाश हेर्। বাহুল্য রূপ ব্যবহার হইতেছে। জুর, প্লীহা তাহা রাজ ৩ টা ৩০ মিনিটের সময় সোনাপুর यक्ष्, भाष श्रञ्जि य ममल श्रीषा मिलितियां शित्रांगं कितिया विजीय नियतित जा परिन व। जिंडिति छ । कूई गाईन वावहात पाता जाना श्रीक जाहे घरे। श्राम निनिहे मानाशूत श्री-ভাষ্রি বিশেষ প্রতীকারক। মূল্য ২ টাকা ত্যাগ করিয়া কলিকাতায় আগমন করিবে। তৃতীয় याश डाक्या छन।

वार्शित ग्रिश्य।

विश्निम श्रीका वाता श्राजिशन इहेगाए र्य ईश घात्रा मर्वछाकात जार्न धककारन जा-दिश्रीश इस । य ला ।।। । होका या साम वा मा खला। छाकदबादगत गदश्य ।

जादनदक्त विश्वाम (य, होक कथन जा-प्रतिग्रीहरू

डेक अभ कर यक हि कर् अग निम् हि है ७८ नः ज्वरन छोयुक (वश्राह्म नान जाइड़ोइ निक्छे शां अशा याई दव।

> इे छे हे खिशांन (त्रन ७ (त्रा) े आहोतीय भारम्यत ভाष्।।

शंख नदिश्व गाम इहेट जाहां ती य भाग, कलाई, मश्रमा ७ यूकी मध्कीय हाए। कमाईशा (मवन क्रिशा প्रथम आर्ताशा लांड क विरुग्ध (य रिय़म कर्ता इय़ ध्ववः (य निय़म् माद्र ७७ मिन कार्य हिल्या जामिर जिल् नियमें जामारी ३ ला जामरे ७ ७९ शत इहे ए श्रीक इड्रेंच (धरः क्रिग्रां नि तथानीत जना य नियमिक छाछा लाशिक काराई शून ग्र ल्ख्या श्हेरवा

क्लिकां । ७ इ जुलाई ३४१८। मिनिन छि एक नगन

मण्डा पर्श्व(मोश्चाहिक) काशदात्र रिनायन প্রত্যেক জেলায় সংবাদ দাতার প্রোজন इই-श्रांट्य। मश्रांम माज्यां विनाशृत्ना काराज ख मः वाम (शत्वा माखन शाह्या थादकन। शंभा शिक िकानाश जारवमन करिएक इड्रेव यथा

> 3। मन्भापक অম তবাজার र। मन्भापक मः । ज मर्भन (७० नः म जातामनात्त छोडे (छ: त्रवाशान कलिका छ।)

ण 'ग्र नियाई छ वन मिश्ह अफ दिल्लान भारकि

कलिकां जा ज मां डेज रेखों तन (यहें दिन अ: यत शर्भाष् शगदन्त मग्र शतिवर्छन।

३৮१८ श्रे जात्मतं । ला जागरे जातिथ उ তাহার পার হইতে প্রথম নম্বরের ডাউন টে ন যাহা मानार्श्व शर्ग ख गगन करत जारा श्रांक ४ देव मगग्न कलिकां छ। इ एक तल्ना छ। ति। विकीश नश्च-রের ডাউন টে ন যাহা ক্যানিং বাজার অর্থাৎ মাত-लाश शगन करत जांश श्रीक ३० होत मगश कलिकां । পরিত্যাগ করিবে। তৃতীয় নম্বরের ও ठेजूर्थ नम्रदत्त छाडेन एडेन योश मानाशूद ग्रमन করে তাহার তৃতীয় নম্বরের গাড়ি অপরাফ ৩ छोत्र मगश धवर छख मित्रदत्र शाहि जाशतारु । छो 8৫ गिनिद्धेत मगग्न कलिकां छ। शित्र छा कित्रित প্রথম नम्रद्रित অপ টে ন যাহা কলিকাভায় আহিদে नश्दतंत्र जाश दिन जाशतारू २ हो। ८० मिनिए कार्मिनः পরিত্যাগ করিয়া কলিকাতায় আগ্যমন করিবে। व्यनगाना विषयात निमिन्न ध्वः त्रविवादतत भाषि मश्दक्ष छ।इस छिद्यल प्रिश्द ।

> बीतांग शिं यूटशांशांशांश य रिनजात

THE UNIVERSAL MEDICAL HALL.

षा वार्ग विका ॥ थूतां जन ७ गां दलतिया जार्था । मक जदत्रत धवः शीहा ७ यक्त द्वादात्र म

३५१८ इडि अमा।

<u>'विश्वांख देशद्रांख</u> (त्रांशांकि कल अभभ छाकः । इडेस्पर्ह ज्यंदर भेट्र जाल्य काट्लब यद्या श्रनक्रीब शीछ इटिन लाग्न भक्तमा दम्या याग्न। धक इ म्ला खेरे छा जो य गांन इरेट ए ए व ज मक षांता (तांश (कवल ख्शिंड थाटक मांड, धर (बांश विनां इय ना। कांबन (य श्रांख लितियां निय भारीत इहेट निर्श्व ना शर्याख भूनर्व। त शोष्डिं इहरांत्र मखारना १ धिह निशिष्ठ जाभिता रक्ष्य रक्षणी ख था। ज कि कि एम कि त महिज श्रा मर्भ कि ति ।। जाना नागक (दोशांत्रन विका थः करित्र जिमा जिमान न न जिमान नानां शकांत शतीकां घाता हेश कानिए ज त्रा शिशाट्य (य ध्वरे गट्रोयक्ष मिवदन म महत्य डेल्लिथिंड (ज्ञांशोकांख वाकिश्व मन व्यादिशाश लां क कि शिष्ट्रम, ध्रमन कि शाइ है शाकी हिकि शांश नित्र क इहेश वाका किकिৎमांश जारिता शा लां क किति । शार नाई, डाँशांख (इंटे विका (मदन करि जादिशा लां क कित्रिशा हिन। इंशा लाजीत इंटिं कुईन। इंटनं उन्हां लित्रियां त विष वि कतियात धक शकात देनव अध विनदन व याईटिज शादत। जिलि किविश ७०६। वर्ष वार्ष्ट ध्वरः छेश भिर्वनानित नित्रभार्यानि छे मिंड्ज जार्ड।

थाजि को डोत म ला आ० डोका छोक लन ७० व्याना। धाई मालातन २ है। दलीहै। शांदम शाईदिन शांदत्र। जाशत

जारेग जा वर्क मिवमां विधि विला क इहेट त्रांकी छेषधामि जानाईसा जात नगती? ভারতবযের নানা স্থানে বিক্য় ও প্রের तिर्जिणि। धाक्या (य मकल बर्ग्नस अवधानित निश्चम विद्यहन। कित्रशाधादकन ला म, तला छेल म छिम्भ का म कि ति दिल के छ। डै। शिक्टभार निक्छ जाभाक्तिशा नित्यक्त । यथन याहा शद्यां जन इहेर वक जार्याह व्यागामिशदक निर्धितम् । य मना (श्राम् णिक मज्त (थांत्रणं कितित, ७ छेय्द्धतः युं जि जो निका विका म, दना विका जाक शार्ठाईव ध्वर छेयशांनि ভिन्न जाशनांन यां हो थारशाङ्ग रहेरचक जाङ्ग रहाङ क्य कित्रग शाठाहर्ज/

भाज करा ए शांक हो।

#### न्ति। अदस्।।

(मर्भ এक वर्मत कांन गांजिक व्रक्ति इहेल 'त भाक्का मागाला है जिया जात हुई 'त याश। जिल्ए ऐत पूर्जिएकत निभिन्न वाभना भागा ना इहेशा शिष्याष्ट्र। वाङ्गलात आत अत्रश मङ्गि च्यांगांभी वरमत अथात्न यमि श्राप्त भागा ना व घत इरेट ज जात्र जानू कुना इरेट व ५वर धरे व्यनाद्धि उ जल क्षावन द्वाता वाक्लान गर्था रे गर्। जाशका देशिष्ठि रहेशाइ। भवर्गम-वाविश्नां ज्यामा मसनीय विद्यार्थ शार्ष प्राप्त प्राप्त य गवर्णिये अध्यम काम विषय श्वित क्रिया । जि श्रांना कतिए श्रांतिए छ न। जिहे ारि २७ ७ जुलाई शर्गाख (मर्भंत कि व्यवस्थ श विनिक इहेश एक धवश मात तिहा छ (छिट्न्लान थिशाष्ट्रन य गंड शदक गंजात ऐ उत दर य च ठूर्डिक इरेशोहिल मिथात्न ज निष्ठां व वृष्टि भास क्षांपास २०१७क इक जल शिव्ह रिष्ट्। ननी ममूनम जदन शतिशूर्व १६माएष এवर क ऋांत्न জলशीवन इइशा शिशाट्छ। इहा छात्रा ज्यित अनातमात कुफ कुफ एक राजा विश्वि ছল তাহার বিস্তর কতি করিয়াছে। ভাজ वौन पारम जशदम्ब (य म्यूम्य भाग छे । ज्ञा ड्रांत य कि शांत्रगान कि इहेग्राट्ड ड्राइ। निर्नेश वागाञ्ज । वागन धारनात ठाता यनि जनगत्र । थादक ভবে ভাহ। ते । विश्व व्यक्ति मञ्जावना। किन्तु मात गर्धा ध्रे य यि यि जागम शात्मात होता किल्लत 'ात किছूमां ज थां क जर जर्मा जनतृ िक इया थाना ज्विया ना याय उत्य जावन थाना तका दि। यादा इडेक लिक छैदन छ तावर्ग व थान छ । र्यापित नित्र नित्र मित्र विद्यांच किन निका किति जिल्ल प প্রত্যুত তাঁহার এর প বিশাস যে এখানে প্রচুর ामा ए९ शन इहेर्व।

वांकलांत पिक्लं व्यक्षत्ल विद्यांष्ठः २८ शत-ाना, त्यिमिनीश्रुत छ्नली, वर्ष्णाम, वाकुण প্रভৃতि गाल व्याज वाला हा इंडि इइंशार्ट। व गक्रा उ श्विन शिद्र व्यनावृद्धित निविध्व भंदमात विश्व इह्द्र श्रांत्न ध्यम ७ कांन विद्यम पानकांत विषय स नाहै।

लिक है ति है भवर्ग ब्रह्मिन य वाक्रमात प्रहे जार्भ वृक्षि उ ध्यार्थ जनवृक्षि इइयार्ड य जानिक नाक्षा कतिए उद्देश या नात्मात जिनिष्ठे इहेरव। जावात लिखे अश्टल अनावृद्धित दाता अना छक् श्री शिक्शिंद्ध ७ जाँ मज़त याम वृश्विना इश । इं इडेल्ल (शिमिएफ) विछ। त्यं, वर्ष्यान विछ। त्यं, र्दलश्रत, गानजूग, कर्टक, ছোটनाগপুর প্রভৃতি द्म भागा तक्या किवा किविन इहेदवा

यां श्रं इंडिक ध्रथम श्रांख आदमात ख्रान्य मन्त या इट उट्ड मा। उद्य छ उत्र जिल्हे, ठाल्यात्व, शि।, कतिमधूव, यदमाहत शक् जिलात कानर ए जनशावान किंचू किंचू जनिके इहेबादिए। शृद्धं राजा नाहा करा किरासार्ह अ मसूनस ত अनिष्ठे इश्रुनाई। अंदिमात यूला अदनक निक्न कित्रियादि। आवाति वर्षगान, मात्रिकिलिंश, প্রভূতি सात পূর্বাপেক।

र बाजकितिक अ दमवक्तिक

নির্বার করিতে পারিল না। আবার গত বৎসর প্রাস্তুত লে নুতন দেওয়ানি আইন দ্বো শুভ ফ.লর जागन भागा कांग किंग किंग इरेख नहें इरेगा लिल প্রভাশা করিতে পারেন এবং यদি উপরি উক্ত বি-তাহার বিন্তু বিদ্যা কেই অনুমান করিতে গা- চার প্রণালী দ্বয়ের বিচারে তাহারা ক্ষতি এন্ত ইই রিলেন না সুভরাং এখন এসম্বন্ধে গণ্ন। করা विकन। आभारित यङ मृत विश्वाम ভाइा ७ ध्या अ जनावृद्धित दाता अंत्मात विद्यान कोन जिन्छे इस वात मञ्जावना। নাই। আনরা এখন এ বিষয় একরূপ নিঃশক্ষে থাকিতে। স্থাল কজ কে'টে দেশীয় বিচার পতি, ভাহারা মুদ্ शाति। जाना (कान न एमत अज्ञाश जानातृ कि कि जांड-वृक्ति इहेल लांकित उठ एस इहेड ना। गढ प्रिंटिक ल्लां कित करनक मार्म उ जत्था शिशां ए । वामनाश मिथात्न जिल्कि इहेशा जविक्षि ए या भाना थाकित्व जांश প্রাচুর হইবে। বন্যা দ্বারা বরাবরি অনিটের क्रिंड शूर्वन इइया (लाय लांड में डाइया थारक।

দেওয়ানি আপশীলেয় প্রস্তাবিত পরিবর্তন। वार्यापत वावञ्चार्यक घली वानाद्विवल इव श्रेष्ठम मार्ट्य मिलि वाशील वील नायक एक मैं बूजन का- शिथारक। ইনের পাও লিপি ব্যবস্থাপক সভায় উপস্থিত করি-शां (इन। जां मता करतक मलाइ व्यविध धेई विघरत कर्यकि छिखां व देश्तां जि खर्ख निथियां ছि। ध वाइनिन विकास अक्र वा धी विशि विभ विभ विभ (म उशानि विष्तंत श्रानो मन्भ न त्रात्थ शतिवर्षिण হইবে সুতরাং দেশের সমস্ত লোকের এ বিষয় অবগত इउरा क ख वा। वामना ध वा च न जी वा मना खरु এবার প্রকাশ ব लिगा। সকলে মনোযোগ পূর্বক व विन ही शांठ उ इशांत पांच छन विहांत कतिद्वा। এই আইনটির সনিবেশিত প্রধান বিষয় গুলি এই।

- (5) (य ममुमश मकर्ममात्र २० छोकात जनिधक मोवि व्यवश्याश सून (मरक्ता खन क्ष क्रिरें ब खल्ब क्म-তায় নিস্পত্তি করেন তাহার আপীল পূকে জজ সা-(इर्वित निक्छे इइंड किन्छ धाइ जाईन द्वात। स्म जाशील डेठिशा याइता।
- (२) উভয় পক্ষের সম্মতি ক্রমে কোন নিপ্পত্তি इंडे ल जाशवा छे छ य शक यि (ति कि खे ति कि विशा (लशा পড়া করিয়া দেয় যে তাহারা কোন বিচারের আপীল कित्रियन न। তाश इहेल তाश्र वाशील इहेरव ना।
- (७) খরচা সম্বন্ধে নিম্ন আদালত যাহা সাব্যস্ত कतिर्वन जोश्त जोतील इहरव नो।
- (8) निम्न जामालटित इहे जन विठात शिंज यमि এক মত হল অর্থাৎ মুনদিফ কি সদর আলা যাহা বিচার করেন জজ সাহেব যদি তাহার বিচার বহাল রাখেন তাহা হইলে আর তাহার খাস আপীল হইবে ন।।
- (a) य मञूमश मक्म गांत मानि छ्हे শত টাকার अधिक नट्ट (म ममूब्र भक्मभात विकात जंक माट्य यादा कतिद्वन তादादे कृषां उद्देश देशत जात थान वाशील इइ दिन गा।

धइ काइटनत श्रभान উদ্দেশ্য हाई कार्टित वाशी-(लं त मः था। क्यांन। (य क्रश वियय इहे एउट्ड डाइरिड (यथात्म विजीय जामान ज श्राया जामान जा विजात वङ्गल ना शार्थन जनजिल । जात रकान आम जाशिल इहेर्व ना। ज्य यिन विष्ठांत शांज्य (तर्नन कतिए अनु हि (पन जांश इहेल अ ममू स मकर्षभात श्वनिविधात इहेट शाहित्य।

व्यामादमत (मदन न्यान कर्ष कार्ष अ जु जम (क)-জদারি আইন অনুসারে সরাসরি বিচার হইয়া थादक। गिविल जाशील विदल्ख धक क्रश मतामित

तथ विविध गांधिक जागन शंना इहेल जाहा कह किए यमि एक कल প्रांश हहेंगे थाकिन जाहा हहें-(एटइन ध्रज्ञश विदिर्घन। कदत्रन जि! इहेलानु उन দেওয়ানি আইন দ্বারা তদাপেক্ষা অধিক ক্ষতি হই-

थं ज मस्की य मकम्बमां त ि ठां त करत्व। खु छता १ (मन्ती य विठांत পতि गंगःक এ দেশীয়রা অ:नक विग्रं श्र প্রব-अना कति । जाता कि क्र मिन धक ग . ल. यनि पूरे अकी (जलाय लाग ना जाम जाम जोरारहिला । जनसिंज कि कि कि कि र वारा कि न कि कि कि प्राप्त र्जुर्डिक इरेटव ना। यि ममूनम श्रांत वना। व्यक्तिमार्गाष्ट् जित ल्लाक छोट्। क्यांनिट श्रांतन जवः महाक्रानता अ निजाल मांश ना किंकिटल श्वंभा करत ना। जावात यिन প্রবিধনা করে তাহা इইলে অধিক টাকার খঙ পতा প্রত করিতে সাংস করে না। স্মল কজ क्रिं एक ভরका यकर्मया अधिक इश् ववर रयथान भाव कि जगकि ज्या कि जिल्ला कि कर इह-

निद्रांष थोकिटल ७वंश स्त्रीय कर्णा वि गनिक वित्रक ने। कतिःन প্রায়ই লোকের ভুতন ফোজদারি वाहरनत द्वा पिछ इहर इस न्।

किञ्च (म उर्शानि य कर्मियां व প्रश्नि । वाञ्चला वांनी गः एक तरे इंशा ७ एक ना धक तरि व थन न। कश्न लिश्र इइटिं इरा। आव त इरात कूणां व-চারের ভ'র দেশীয় বিচার পতি গাণের হাতে থানি-मिलिटल अर्थ लहेश। यक प्रा छिलि ए इंड इहेर्व धवर यांशादित अमहास जातक जग इहेवांत मछार्ना তাহ রাই ইহার চুডান্ত নিজাতি করিবেন। সুত্র माल कक कार्छ उ कि जिला ति जा इन कर्जुक ग कान जनिष्ठ इइँएउएइ मक्ल जक्ष गत्न क्रिन जोश व्हेल बूजन एम अशानि जो हैन त क्रांता मर्ख खः । अि इ वात मञ्चावना।

ध (नदभात वर्डभाग व्यवस्थ (यज्ञभा, व्याह्म काम भित्र कारेला बाता लारकत हरनत जात राजा विक्रज इहेगा नियाहि, प्रतन जिम्मात उ श्रिजीय य्यत्री जित्य मनाख्त इहेट्डिइ, लाक्तित (यत्री ममाज नामत्नत देशत मिन मिन आसा कांग्रा शहराहरू, भारियत भागन (मक्रिंग मिन पिन जिन जिन्हें उ इरे जिल्ह ध्वः (यक्तभ म्यार्ज विम्ब्राला छेशित्र्ज इहेशर्ष्ट् जोशां जारेन श्रीक्रिक - इर्ल (मर्भात विद्रांष व्यनिद्धित मञ्जावना ।

इवं इष्डिम मार्ट्रवत अई आईन श्रांत क्त्रम् श्रांन উष्मिना (य ल्लाक्त रकम गा कतात न्ला रा क्रिया गाइरव। किञ्च आगादनत निद्वजगार इहा षाता धरे ज्ञा रात वृक्षि कहिर्व। ल्यारक यथन जानित्व रिव रिव अशूपश शकर्षभात पावि छ हे भाज रिक व्यन विक वां हात वां भी व इहेटव ना उथन नाना को लिल यादाः ज मकमा गोत प्रदेश । छोकात अधिक माविन्द्रं তাহার যত্ন গাইবে স্তরাং এই আইনে- তাহাদি-शदक मिथा। शथ जनलम्रन क्राइट ७ क्रम् वाधा करित । इंदे। एक जात जकि (मात इंद्रा अद्रेज्ञ भ शिथा। माबित इक्ति कितिल यक्षात्रात व्यव व्यनर्थक वाडिश याइँदिव इंश द्वाता প্রজানিগের কিছু यक्टल विषय व . हे। जा शाबा व्यत्निक श्रुल हा हिल्ले श्र्याख गाइट शादेश ना अवता क्रिमादतता इन्हे हैत कालाय नहेल श्रेषा निम जामानात्त्र

नष्मि जि करत । ভাহাদের দেব ভয় দূর হই ।। আর এক-उँ ७ स इरेरि । জেলার হাকিমেরা প্রায় প্রজার পৃক धवः धक्नंकात नव। मन्भ माश्री मिट्रात उम रक्षात धरे ए जिमिनांत प्रतिश्व वि. लंग जिनिक करत धवः जारा-एम उ छ ऋब एम ७ ३१। व्या श्राम कर्ड्या कर्षा । व्यापात व छ गानूरयत्र। २कायलात मार्यक्तिरात हरकत विवकारजारे অনেক মকর্দমায় প্রজার জয়ী হইবার সম্ভাবনা। কিন্তু ইহার পরিণাম বিষ ময় হইবে। এরপ হইলে জমি-मारतत। य छे भार । इ इ छेक প্রজা मिर गत জব্দ করি-वात यञ्ज कि ति ५व९ ञस्र अ वागत्न युक्त इहेत्ल অসুরেরই শেষে জয় হইয়া থাকে স্বতর ং ইহাতে না প্রজার না জিমিদার ইহার কাহারও মঙ্গল হইবে না य मकर्ण मा कतात म्ला भा गवर्णमध्य कमाइए वाहिए-ছেন ইश छाता जाशत है वृश्वि इहेर्व। আমাদের বি:व-- क्रनाय इंशां ७ वं रायक की विश्व इंश्व १) (लाक कुकर्म उ जानर्थक वास विश्व इहेरव (२) जिमिनात (धानी छेथमञ बाहेरव। बूजन को जनाति जाहेन. कतिशा गवर्गामणे ভाशामिगरक माजिए छे उ जिप्ती गाजिए छे पिरात शनान कर्तियार इन, बूडन का ने (लत जाडेन कतिया जाहा मिगरक जज उ रूनगक पिरिशंत शर्मान उकतिर्यन (७) श्रेष्ठा छे एमन याई-द्व। জिनिप्तिता প্रজাत প্রতি জেমেই অনিষ্ট (मट्य पुष्टे वर्मत अखत पूर्डिक इहेवात मण्ड वर्ग, त्य (मद्भ প্রজারা লেখা পড়া জানে না, যে দেশে রাজ विष्ठ विश्व करितल जारात लाकी श्रिकारी करत-न, (यथात्म धक्रिं। भक्ष भात निष्णि अञ्चान इत यादमत शृद्ध इत्र ना, जनाद्यादम প্राक्षा छेश्मन पिट्ड शाति.व। (८) ज्ञा इहेटल हाहेटकार्छत ज्ञानक छिनीन मकखल्ल गमन कहित्वन धवः मःখ्यात वृश्वि इहेल जानक छेकिन छेमदतत ज्यानात एथन हेनि युक्तियादाता (यज्ञाश (लाक कि मक मा कि तिवात क्ष्र) है। वृिक्ष कर्त ज्थन जां हाता मिहे क्रिंश जिनि के किर् थाकित्वन (१) अथन প্রজারা হাইকোট পর্যান্ত জিমিদার দিগের দঙ্গে যুদ্ধ করিতে পারিবে না জানি-३१ (६ मगूमश विषय निकाबि कर्त এ काइन विधि বিদ্ধাহিলে ভাষা আর ভাষারা করি.ব ন সুভরাং श्रात अकल्या करिवात म्या इसि इरे-বে। (७) অবিলার ছইবে। যে সমুদয় বিচার পতিবা এ দেশের অ চার ব্যবহার শাস্ত্র ভাষা সম্বন্ধে क्याभंड ज्य करत्य जंशामत श्रां कृष्णं विष्ठार्वत ভার থাকিবে। দ্বিতীয়তঃ মকস্বলের হাকিম দিগের शक्तशां इरेवां मद्यावना। विज्ञा शिव्तां यन्गा ध्वः रन्यात जां जां बिक थमां अहे य जाहाता काह रक विष्विष उकार्शक (सर् कर्ता यक्ष हाकिय मिट्यात এই त्राश (घ्रष वि. घ्रष थाकात विचित्र कि, यड पिन मञ्या (प्रवंश ना इहे व उंछ पिन इंहा थे। किर्व কুতরাং দুর্গিন্ত হাইকোটে নির্দেশক বিচার পতি तिथि वक्त इहेटल व्यात खारा इहेटव ना।

इव शाष्ट्रेम- मार्ट्रवं श्रविष्ठ वा इन विश्वत इहेटल (य ममून्य (माय इहेवांत मखावना जामता छ।-श्तक अ अनि डेशदब निधनाय। शार्क वर्गः द गा-न (वर्ग कित्रिया (मिथिदवर (य हेशह खाहरा कि कि ুবিচার করে তথ চ সেখানে সুশিক্ষিত জতোর জুরির। প্রেসিডেলী কলিখরাছেন যে ' লাভি- ইয়াছেন। ইংলিশ গবর্ণযেণ্টে লেবিং সাহেবকে গো-महोग्न लहेगा প্रथम विष्ठांत करतन এवः वह विष्ठांत श्रिका भिष्ठानि भिर्मालिकीत कार्या अकि माखास कत श्रीका किला कल इति थाति थाति कार्या ইইবার সময় উচ্চ আদালতের একজন জন্ত উপস্থিত। জাপে লিবিং ইংয়াছে। আমি জানিন। শান্তিপুরে লেবিং সাহেবকে বিচারাধন আন্নলে লোকের शांकन । इहात जाशील उट के विनिष्ठीत विज्ञान जन जाशिलाशीन कियमनात शांवत होता विजिन्न शिक्तिन शिक्ति हरेत ये शवर्राक उ वाक्रानि

शील इश এवः रमथान इहेर इ। डेम अव लए कावात वाशील इइट वाद्र এ जिस्स (मधादन ममाम शेर्ड्र जाति প্রাত্ত্ব। সাধারণ মত ভারি প্রবল। আমা-(मज (मन्न), विदन्नी जाजा जारा जारा जिसक्छ। विदमनी वाइन कानन श्वित्र इहेश। (मान विमृश्थन देशिष्ठ रहेरत विजात পতिবि मणी, जूतित विष्ठारतत প्रथा नाहे. पिनीयामित्रांत उ तांक श्रक्ष मित्रांत मद्भ मद्धांव नाई. गांशांत्रण मट्डत वन नांहे, महाम श्व धथन शम्य इश नाई अञ्जाः এখানে আগিল র হিত इहेल অবিচার इरें त कड मख्रां वना आहि छोश वना याय ना, जड-धव वारेन्छी विश्वक रहेवांत शृद्ध वागादनत मक-ल्लित इंड्।त प्रांच छन दिछात कता कर्द्वा एवर यान व्यनिष्धित मञ्जावना थाक बङ भीष्ठ मञ्जावना इशत প্রতিবাদ করা কর্বা। এখন অনেক জেলায় রাজ निভिग्न नि इइग्राष्ट्र। व्यागादात विद्याग मकल मछ। इइटिं इंशंत श्रिचिनाम कि श्रीयकछ। करा व्यक्ति कर्द्या। ताष्ट्रमारि मणा कर्ड्क इरात था. ज्वा म इइट ज्हा

(ডिनि निউদের সম্পাদক রাণী শরৎ সুন্দরীর खन कीर्जन कर्ता य पर्मा अध्यात थि जि जि प्रभाई-श्राष्ट्रिन। अञ्चल्राख आंशां गामित १०३ जातिथ পর্য্যন্ত প্রতিদিন তিনি যত লোকের আহার দিয়াছেন थवः । ला खावन इ एक श्रीकिनिन यक लाकिएक ठाउँल দেওয়া হইতেছে ভাহার একটি তালিকা নিম্নে প্রকা-শিত হইল। ৩১এ আষাঢ় (রথের পূর্ম দিবস) রথ উপালকে লোক সংখ্যা অত্যম্ভ অধিক হত্য়ায় তৎ পরিমাণ লোকের উপযুক্ত অন্ন ইত্যাদি পাক করিয়া ভোজন করান ছঃসাধ্য বিবেচন। করিয়া রথের দিন অর্থাৎ ৩:এ আষ ঢ় অন্নছত্র বন্ধ ছিল এবং ঐ কার- লেজেৰ পাঠ্য অনেক পুস্তক বুঝি ত পারেন। এবং ণেই ১ লা শ্রাবণ হইতে ভোজন না করা য়া প্রতি এই নিমিত্ত এই পরিবর্তনের প্রয়োজন। যে সকল জনকে আহারের উপযুক্ত এক শের করিয়া চাউল ব্যবদায়ে নৈদগিক জ্ঞানের প্রয়োজন তাহাতে কিছু-দেওয়া হইতেছে।

-31 4.60	**************************************		
১লা আ্যাড় ৩০		১৬ আধাত্২৫৮১	
२७	800	390	২০৯৮
ত্ত্	৬৬	: ५७	2900
8खे	325	১৯এ	9000
वर्ष	000	. २०७	9380
৬এ	\$c\$	३५७	0390
- १७	P-40	२२७	२२७५
<u> ५ जे</u>	25 8	: ২৩ঐ	२२१५
रुखे	. 5₹00	३८७	9000
५०७	5350	३०७	२५१०
अ	2bbs	३५७	<b>298</b> )
>ः जे	5985	२१७	8000
१०७ .	3 25-9	२४७	७৮१२
286	385¢	२५७	. 385-3
५० छ.	20-58	७ ज	8965
		् ७०७	5092

त्याचे ५५०५०

ट्याडे ज्वलक्ष

न्य इस अशान इस्ट को है कर यह कि विश्व मान विश्व को निर्मा के निर्म के निर्मा के निर्म के निर्मा के निर्मा

शांट् आंत कोन र्इ भगता एकंश इरेशांट किना। ভাইস চেয়ার ম্যানের মনোযোগ ও যত্ন দারা এরপা উত্তম कार्या इरेट्डिइ এবং শান্তি পুর তাঁহার নিকট विर्णिय क्रिंश क्रिंडक, श. ला वक्त तिहिशा ए ।" भाषि-পুরের ভাইস চেয়ার ম্যান যেরপ যোগ্য, সদাশার ও দেশহিতৈষী লোক তাহাতে তাহার দারা এরপ कार्या नाश्अशारे जानाशा

विश्वति मण्यां कि ७७ याणा मृत्ना वि ७७ डे २ क्रिके शेख श्रेक शं कति । शिति दिन जागता (म ভরদা করিয় ছিলান ন।। ইহার সম্পাদক ঢাকচিক্য पिथो है शा वा तक व थवः मतला कि शिमी शंद विख त्रक्षरमत यञ्ज करतम मारे। रेमि रिक्षण गञ्जीत ভাবে काशक छ। ला इट उट्टब धक्त थ यि छ। ला इट शादिन তবে প্রকৃত বান্ধবের কার্য্য করিবেন।

आर्ग्यामर्गानि अर्गानि आग्रा मर्हान इ তে শুনিতেছি। এই অশেপকাল মধ্যে যে ইহার তাহা আমর। সম্পূর্ণ রূপে আশা করিয়াছিলাম। आर्श्यामर्गान পণ্ডिज यद्श्यं एक नगांश तज्ञ, वांबू क्रायु-कमल ভটो চার্যা প্রভৃতি বিখ্যাত পণ্ডিতেরা লিখিবেন প্রতিশ্রুত इইয়াছেন। আনরা ভরদা করি তাঁহার। একটু মলোযোগ 'করিয়া বাঙ্গালির মন্তিজের শক্তি (मथा देशा आगामिशिक छत्रिछार्थ क्रिया।

किलकां विश्वविष्णां लास्त्र स्मान्द्रे श्रेष्ठांव इक्टिक् य वालकि बा का के आई श्रीका इ डिडीर्न न। इरेश (यि एकल कल्लि श्रांतिक श्रांतिक श्रांतिक न।। এन्छ । भर भरी क्लां जीर्न वाल करा विष्टिक न कां-লেখা পড়া শিখিয়া প্রবেশ কর। কর্ব্য। স্কুত্রাং মেডিকেল, ইঞ্জি-িয়ারিং প্রভৃতি কালেজে কিছু লেখাপড়া শিখিয়া যাওয়ার নিয়ম করা নিভান্ত अगाश कोकं नहर। তবে এটাপ প্রকার बूहे वर्मत शद्त काछ जारे शतीका धवः छ। हात পরে ৫ বংসর যোরতর পরিশ্রম সহ মেডিকেল कल्लिक व्यराय्वन, ७७ श्रिक्य विश्वानि , वालक्त पूर्वल भ ते दिन महा इस कि न। मत्मृह धवः दि मयूपस वालक पिरांश এত मङ्गि नाई (य धिमिए भी कार्ल-(জ পড়ে कि वि এल পর্যান্ত পাঠ সমাধা করে ভাহা ताई महताहत याखिरकल काल्या यात्र। एत्रशं वालक मिट्यंत शक्क १ वरमत विद्याल थाकिया कालिख পভার বায় কুল, न ছঃ माधा इहेशा डेिट्र ।

आंगता गंड मशांदर य लिथ य तमभूतित ज्ज श्रक्ष जज (लिविश माहिव वां जी शिशाहिक (मिछी जुल। जैर्शत विष्त इहेए छ । त्राज-मारी किंगिननों बर्नान मार्ट्य, जानश्रात्र जज लाडिम मार्ट्य धवः रक्षिगात्मत ए क कल्लम मार्ट्य डीहोत विहातार्थ विश्वभागत निय्क इहिना-ছেন। রঙ্গর কি কলিকাভায় ইহার কোন্ স্থানে বি-চার হয় ভাহার সাব্যস্ত এখন প্রাস্ত হয় নাই। गांचित्र मिडेनिमिशालिति द्वारा উভ्य इश्हिकारित वाहियोह मिश्हाय मार्ट्य यक्षीया

#### THE AMRIT BAZAR PATRIKA.

CALCUTTA-THURSDAY 30th July 1874.

IF he has not already done so, Babu Kissoree Mohon Chatterjea ought to apply for the Tagore Law Professorship. Respectably connected as he is, being descended from the illustrious Raja Rammohon Roy and profoundly clever, especially in the classical languages none in Bengal we believe has a better claim to the Post.

JUSTICES Morris and Phear having disagreed as to the guilt of the prisoner in the case of Mr. Meares, the case was referred to a full bench. Mr. Phear was for conviction and Mr. Morris for acquittal. The full Bench consisted of the Chief Justice and Messrs Morris and Phear. The case was reopened early last Monday by Mr. Lowe and in the latter part of the day, the argument was takea up by Mr. Evans. It was continued till 4 P. M. on the following day. The case excited a great deal of interest and almost the whole bar was present, Mr. Evans, argued very ably but it appeared that his arguments did not make much impression upon the minds of the learned Judges. Mr. Morris sitting apart, all the while aparently taking no part in the discussion. The learned Judges reserved their judgement.

THE Government of India have ordered an inquiry to be made as to the charges brought against Mr. Levien under Act 37 of 1850. Commissioners have been appointed already. They are Mr. Molony Commissioner of Rajshye, Mr. Lowis Judge of Bhaugulpore, and Mr. Connel Judge of Burdwan. Mr. Molony is no doubt one of the ablest offirers under Government but vet for some simple reasons we do not like his appointment to this duty. The trial will be no doubt held at Rungpore and Mr. Molony is commissioner there. The independant action of the people in his preence will be simply impossible. Though there is no ground for the apprehension, yet people will be afra d to speak out their minds in the presence of Mr. Molony. They will think, however foolishly, that they will offend their Commissioner, by speaking anything against Mr. Levien. Then there is another reason. Mr. Molony is interested in this trial. He was Comissioner, while Mr. Levien was Judge. If the charges against Levien be proved he will not come out of the trial scatheless. What he was doing all these five years? Why he did not know this rumor, known throughout the leugth and breadth of his division that Mr. Levien's Sheristadar wrote decisions for him? Mr. Levien proved guilty, Mr. Molony's negligent manner of supervision would be proved along with it. The Government should not charge him with this onerous duty and Mr. Molony with his highly honorable feelings should not accept it. The prompt action taken by Government in this affair has given universal satisfaction, and overpowered those with confusion, who dared to give out that Mr. Levien was being impolitically backed. The justice of the British India Government shines at this moment resplendent, why then this drop of dirt in a pitcher of milk, why dark spots in the sun? Let another president, in the place of Mr. Molony be selected, and we dare say this concession will not go unrewarded. L t not, the people have the least chance of suspeating the motives of Government. Let not at a future period be said by cavilers, if Mr. Levien escapes, that it was Mr. Molony, who by his presence prevented the people to come forward, and that Mr. Molony was appointed for this purpose alone. For Mr. Levien we are sincerely sorry. A more good natured man never came to India, he is affable, corteous and kind hearied, and it grieves us to speak any thing against him. But a very important principal is involved, a principle which, though it existed in a latent state, was revived by hot-minded and unthinking politicians. Who would have taken any further notice of Mr. Lievien, after he was removed, if such a hue and cry had not been raised against the native civilain? There are more than one hundred Europeau civilians to one native civilian, and we do not know how many of the latter are yet to be sacrificed to the manie of Surendra Nath. Thus far it is certain that had there been no Silhet commission. to day there would have been no necessity for a commission at Bungpore. The ways of Heaven are mysterious. Mr. Lingham, we hear, has been charged to prosecute. The people of Lungpore must look sharp, very sharp, indeed! It is said that the trial will be held next week.

THE following memorial submitted to the Viceroy is copied from the Hindoo Patriot:—

RESPECTFULLY SHEWETH,—That Your Memorialist craves leave to approach Your Excellency as the guardian of the Queen's subjects in this country with this representation, and if in doing so he has not come through the usual channel the peculiar circumstances, which have driven him to the necessity of resorting to this unusual step, will he humbly hopes, plead as his best apology.

The Ruth Festival of Mahes in Serampore has obtained a celebrity next only to that of Pooree, and Your memorialist's ancestor, Krishnaram Bose, about seventy years ago, founded the sacred Car for purposes of public worship. Within the memory of living man the dragging of this Car had not been stopped, but on wednesday last by direction of the Joint-Magistrate in charge of the Sub-Divison of Serampore, acting under orders of the District Magistrate of Hooghly, the Ruth or the Car was not drawn. Your Memorialist will not trouble Your Excellency with a history of the prohibition of the dragging of the Car on the day of the ceremony of the first journey, which he hopes to lay before Your Excellency in a future memorial, but he may state here that the Joint Magistrate had on that day, that is the 15th instant expressed himself satisfied with the repairs done under his orders, and that on the next day, that is Thursday, he permitted the Car to be drawn in the presence of himself, the District Superintendent of Police, and the Executive Engineer of the District. On Friday, the 17th instant, the Joint-Magistrate called attention of the priests to a wheel, which had got loose in course of dragging the previous day, and intimated in a Bengali Purwana that unless this wheel was repaired or replaced the Ruth or Car would not be permitted to be drawn. To avoid all disputes the priests dispensed with the condemned wheel altogether, but without examining the Car again the Magistrate of the District issued an order to the Joint-Magistrate of Serampore prohibiting the dragging of the Car unless the repairs were done satisfactorily, and this order was communicated to the priests by the latter in a Bengali Purwana dated the 18th instant, which reached Your Memorialist on the 20th idem. Your Memorialist then felt the necessity of having the Car thoroughly examined by a competent Engineer, and he accordingly applied to Mr. Brad: ford Leslie, the eminent Engineer of the Calcutta Municipality, who was good enough to proceed to Mahes, and after carfully examining the Car has

"Having examined the Juggernath Car at Mahesh near Scrampore, I am of opinion that it may be moved in the usual manner with perfect safety.

given the following certificate:

BRADFORD LESLIE.

Calcutta, 21st July, 1874. Your Memorialist received this certificate last night, and this morning he waited on Mr. Pellew, Magistrate of Hooghly, soliciting permission for the dragging of the Car tomorrow the day of the return journey. He made this application verbally, and shewed him the certificate granted by Mr. Leslie, but in reply Mr. Pellew was pleased to say that he did not know who Mr. Leslie was, and could not recognize him, and that if he (your memorialist) could obtain a certificate from his (Mr.-Pellew's Engineer) that is the District Engineer. he might obtain the necessary permission. Your Memorialist then explained that he would await the Executive Engineer any time he would appoint for the examination of the Car, but the Magistrate said that he could not make such an appointment without knowing his engagements, but that he would depute the Executive Engineer either this afternoon or to-morrow.

The above narrative, your Memorialist respectfully submits and ventures to hope, will satisfy Your Excellency that the Magistrate of the District has not given that prompt attention to Your Memorialists representation which the urgency of the occasion demanded, for if tomorrow, the day of the return journey of the Car, be allowed to slip away in the same manner as was the day of the first journey, then there would be no observance of the ceremony for the year, and thus a serious blow would be offered to the religious feelings of the Hindu community not only of Serampore and Hooghly but of Bengal generally.

In the ordinary course Your Memorialist would have appealed against the order of the District Magistrate to the Divisional Commissioner, and failing him, to His Honor the Lieutenant Governor, but as both those functionaries are now on tour, and could not be communicated with without the lapse of some time, and as there is no time to lose, this being the eve of the festival, Your Memorialist is compelld to approach Your Excellency in the hope that considering the magnitude and urgency of the question involved, deeply affecting the religious feelings and observances of the Hindus. and in the absence of the local authorities, your excellency will be pleased to take this humble representation into favorable consideration. Your Memorialist feels confident that the certificate of such an eminent Engineer, as Mr. Bradford Leslie, will be considered sufficient and madisfactory.

Your Memorialist accordingly prays that Your Excellency will be graciously pleased to take the above facts and circumstance into Your distinguished consideration and to the such orders as may to your Excellency seem fit, permitting the

the space of about 100 yards at which distance it is now situate.

The authorities in Hooghly evidently forgue that Sir George Campbell was no longer in Bengal. They forgot also that Lord Northbrook governed India. Their discomfiture was however complete, and we feel a malicions pleasurs at it. Was there ever such meddlesome men seen? Sir George founded a school, the prcfessor is gone home but it appears he has left some worthy successors behind. Pity it is that Lord Northbrook governs India. Loyalty is so inherent in the people of India that we have often thought whether it is possible for them to rise against the Government. We think under two circumstances it is possible. When outrage is offered to their females and when their religious feelings are wounded. Mr. Barlow 7 though a civilian was not respected by the mob at Modhubani. Fortunately enlightened natives were at the helm of the ruth affair and so the matter was settled so smoothly. We warn the Magistrates, with the very bestof intentions, when such pranks seize them not to depend too much upon the sacredness of their persons. Barlow

so depended and found out his mistake. Our readers ought to know that there is such a District as Bogra in Bengal. Now the people of this district are shewing symptoms of insubordination and independance. Inaccessible as the district is, tame and submissive as the people are, it is strange that they should shew impatience at a trifling piece of oppression or lawlessness. Neverthless such is the fact. Letters have come to us from several parties with an intimation that they cannot bear it any longer, as if it is in our power to remove their grievance. One earnestly requests us to send a correspondent there, to report matters to us, for he says he dares not do it himself. But what is their grievance? They say that there is a high functionery there who--eats and sleeps! Well no harm in that we should sup p. se, for Her gracious Majesty does it without being held accountable for it even by the Fenians. But they add "he does nothing else." Then who does his work for him, for now a days it is impossible for a high officer to idle away his time? Ans: his amlas. Then the charge against this high functionery is that he does nothing himself but eats in I sleeps, and his amlas work for him. This account divested of its poetry shews that this gentleman depends much upon his amlas. But we see no harm in that. His amlas are probably very clever and trustworthy. But they say that he does something else besides this, viz he rides and drives. Then this gentleman is charged with four offences. (1) eating (2) sleeping (3) riding and (4) driving. On further inquiry we learn that the people object to his eating on the ground that naturally a little indolent, eating makes him still more so. To his sleeping the objection is that while he sleeps his amlas blacken his face. His riding is objectionable because he never rides alone, but takes his lady with him and compels people? to salaam him and whenever he rides he drives, he drives people before him with a whip. He is further very fond of forming relationship with the people, so that he has called many a man of Bogra his brother-in-law. The other day a moonsiff'spleader, while engaged in conversation with a few friends, forgot to salaam the couple who suddenly came upon them. He immediately fromed the same relationship with him and the whip trembled in his hand. The pleader salaamed and only paid his due. But where was the interest? For the salaam was not immediate but after the relationship was formed! And as interest the pleader was made to salaam the horses! We hope this portion of the narrative is not true. In the sunderbands two Europeans while passing by us in a sal canoe fell upon the rowers of our boat. They fell so suddenly that the poor fellows were staggered, so the repeated calls of the Europeans for salaam were not promptly attended to. Thereupon one of them who was smoking a cigar took it from his mouth and pressed it upon the person of a rower. He was burnt and they all salaamed, to the infinite delight of the Europeans, who were perhaps servants of the Port Canning Company. For ourselves we do not see much harm in salaaming Europeans if it pleases them. It costs us no money nor trouble, a little bending of the head and a slight motion of the hand is all that is necessary. If it pleases you, salaam to vou, all Englishmen, not only here but in the Colonies and in other parts of the world out of England : accept our salaam not only you unknown of Bogra, but also you of Gowhatty, and all Englishmen; and not only to you \_ but to your horses, dogs, and pigs besides, only

your whip back which is rather sharp for

The District Superip-

our dyspeptic persons.

tendent struck a peon, not his but anothers. The peop chose to lodge a complaint and what Joseph is more, proved his case. The Assistant Magistrate who tried the case fined the Head of the Police Rupees 5. The Assistant Magistrate probably thought that after this very good lesson the Head of the Police will never more break the law; but it happened that a short time after another charge was brought against this keeper of the Peace. This time it was no peon, but a Native Doctor. This Mahamudan gentleman after shedding a flood of tears complained to the Magistrate, that he had received several kicks from the Captain Shaheb. One of the servants of the Shaheb had been sent to the Police hospital. He recovered, and the Police-Superintendent came to demand him. The Native Doctor told that he could not let the patient go without the permission of the Doctor, and if Huzoor would allow him, he would go to his superior for permission. But the District Shaheb answered him not in words but several well directed kicks. This was the version of the Native Doctor Ramjan Ali. A complaint was lodged as advised by the Magistrate and now came certain diplomatic affairs. There was an attempt at negociation, but it fell, either through the obstinacy of the native doctor who wanted too much or the pride of the district who yielded too little. Evidence was gone into, every thing progressed in favor of the complainant, when a series of mere chances changed the aspect of affairs. The Magistrate came early to the Court, at 10 or 10 A. M. and the complainant was not found. The first thing that the Magistrate did was to call after the complainant, and not finding him the case was of course dismissed. But why was the complainant absent? He says that the Magistrate huzour never came to Court before noon, and so he did not expect that he would come that day so early. Neither was he absent alone but the muktiars and many of the Court amlas; they too did not expect the hakim so early. Then again the first thing that he used to do after coming to Court, was to sign papers and so forth and after a considerable time he attended to the cases. But he thought fit the same day to keep all this business aside and try at first the case of the Native doctor. Now we do not at all mean to say that the Magistrate in order to finish a disagreeable case, and save a country... man friend adopted this cunning, no, far from it. It was all mere chance. It so chanced that he fell impelled that day to go to Court early, and it so chanced that he felt impelled to try his cases before and to mind his other business afterwards. There are malicious men every where and there are malicious men at Bogra They judge others by their own standard. They do not consider that it is impossible for a highly honorable gentleman to stoop so low as that to save a friend. But there was another fact which confirmed these men of their suspicion. When the Magistrate passed the order of dismissal, there happed to be present one single muktiar. He said some thing in connection with this case and he was well served and fined two rupees. After all, the people of Bogra have been blessed with a capital keeper of the Peace and defender of the weak from the strong.

THE people of Dacca have gone mad—mad with of joy. The Viceroy himself will tread with his sacred feet the soil of Dacca, and the Viceroy, none other but Lord Northbrook. They are holding meetings every day, the corporate bodies of Dacca. The people's Association have of late shewn some life. They handed to His Honor the Lieutenant Governor, on the occasion of his late visit a petition numerously signed, pra i g for the introduction of the elective system. Before Government relief came to Dacca the members of the Association had organized themseives into a relief committee, and offered relief from the money subscribed by them. When Government grains reached Dacca the Association was entrusted with onerous duty of affording relief. But the intended visit of Lord Northbrook has thrown the people in a state of feverish excitement. The Municipal authorities are busily engaged in making up for their past neglect, and they mean to present Dacca to his Lordship in her wedding dress. The People's Association subscribed on the first day the sum end of Rupees eight thousand, to make preparations to give a suitable reception to the Viceroy. Some propose to lay out the amount for a Northbrook Hall in Dacca. Others are for lighting the streets and so forth. Indeed Dacca with all its advantages, is sadly in want of a public Hall. They could not give a suitable reception to Sir Richard Temple for want of such a hall, and we do not know where they mean to take Lord

wook himself. We done

memorated in his name, than a grand and firework reception. But His Lordship should not be received in the dark, and some show is absolutely necessary. We believe a portion of the money subcribed may be applied in lighting the city and the rest in erecting a "Northbrook Hall." All the Zemindars and rich men will come, well disposed to spend some money and if the People's Association lets slip this opportunity of scraping means for a public Hall, another may not present itself for years to come. Of course the members of the Association mean to present an address. When Lord Northbrook first arrived in this country, the Dacca People's Association welcomed him with a bold almost rude adress. Now His Lordship will find that the people of Bengal can be loyal also, and let the people of Dacca welcome our Governor General, not only with respect but affection.

Now it is needless to remind the people of Dacca, that Lord Northbrook goes there well prepared to grant them a boon. Such is the custom. When kings and Viceroys visit their people, the people have some duties to perform and the king has his duties too. His Lordship knew very well before, that since he was going to make the people spend, however cheerfully, some money for him, he in return as the Chief Ruler would be required to commemorate his visit by some great boon. What that boon may be we do not know, let the people of Dacca and his Lordship settle it between themselves; what we want is this: let the boon be for Bengal or India and not for Dacca only.

OUR PASSION FEE APPEALS-We have a very great veneration for he English nation. They are a superior race, we acknowledge it; they undertake to teach us and we submit to their tuition. They teach us many things humiliating to us, but yet we accept them with but only a show of struggle. They have been teaching us since the days of Macaulay that we are a ration of liars, and that teaching has borne fruit in as much we have almost come to believe it. They teach us that we are cowards, physically and morally, and we submissively accept the truth of these teachings. They teach us, that we treat our women shamefully, and this teaching has given birth and occupation to hundreds of reformers. They say that we cannot govern ourselves, that we are not fit for high and responsible duties; and so we are quite satisfied with the charge of a sub-division. They have never taught us, that we are capable of some good things; for if they occassionally thought fit to speak well of us, they immediately corrected themselves by adding some disparaging remarks. The Bengallees are an intelligent nation, but deficient in moral qualities. The Bengallees have an aptitude to learn, but their learning is superficial. This but destroys every sweetness of their praise, and converts their praises into sneers. If they had only sympathised with our failings, and enecuraged us with good words, with the veneration that we entertain for the nation we could have made by this time some sure and steady progress. They have taught us that the mahamudans were rascals, and their Government ruined India, that the Englishmen are gods and their Government is a blessing. (We have acknowledged the truth of all these teachings with deep humility and thankfuness, and now comes the intelligence that we are a litigious nation, exhorbitantly fond of lawsuits and interminable appeals.

We however do not plead guilty to this charge at least in the shape it is presented. Sir George Campbell taunted the Babus that they entertain ridiculous notions regarding appeals. To his taunts we did not lay much stress. But now the charge comes from Mr. Hobbouse who would never have brought such a charge had he not sincerely believed it. We have no doubt some passion for litigation, but whether it is a legacy from our forefathers or a foreign production acclimalized here by our rulers and nourished here with great care is not difficult to ascertain.) Some sort of excitement is absolutely necessary for men to live, whether that of war, love-making, politics, gambling and so forth. Now we have no wars of our own, and though years ago we fought with our neighbours and the docoits, we are not allowed to do so now. We marry our girls when young and shut them in, and we have no serenading, flirting, ogling, and waltzing, amongst us. To the mass of the people, it is of supreme indifference whether the English, the Russians or the French rule them so long they are not heavily taxed annoyed and oppressed. As for gambling, drinking and other vices, they are almost unknown. Dalla dallee gave them some occupation, but these party feuds are dying out of the country on account of superior education and so some excitement-leving people have taken to litigation. We plead guilty thus far. (But has not Government all along tried its best to nourish this litigious spirit? At one time only Government made an attempt, to check this spirit, by increasing the stamp fees, but the system failed. And this is the second aftempt by restricting the number of appeals, and we fear it

not believe that this so-called fondness of our na for appeals, depends in any way upon any n defect of our national chracter. We mean, placed as we are, any other nation; would under same circumstances be as fond of repeated app as it is said we are. - There is some cause at we we shall presently see what that cause is, and long that cause remains, no amount of legislat will be able to remove the evil. It thefts occur account of scarcity, the most projer way of ches ing the evil is to remove the scarcity and not to p the hungry population into jail. (Now let us s why this passion for appeals is attributed to nation. It is said that appeals of small value occu much of the time of our High Court Judges, dr upon the public treasury and ruin the parties. mitting this, how does Government mean to s' press this passion? By an arbitrary measure. the passion will yet continue to exist and work mi chief in many other ways. We said the other da that people will try to raise the value of their suits to upwards of 200 rupees and thus secure a chance in the High Court. Then again if your law Courts do not satisfy the people, the people will not willing. ly resort to your law Courts, but take law into their own hands. It is the aggressor who will be tempted to try his chance in the law Courts and oftentimes succeed. But the most serious mischief that we apprehend is the increase of lawsuits. If there be a less number of appeals, there will be a greater number of fresh institutions. The disappointed parties will not stop there, where Government or Ma Hobhouse would wish them to stop. We speal this from muffosil experience. The party who think himself unjustly defeated is not to be kept quiet so long as there is the least chance ef recovering li rights.) There are no doubt men, who are never to ! satisfied, but the number of such men in Bongal, small and they are known characters. The people of the district, the pleaders, muktiars and the hakim know them and their passion for litigation is universally ridiculed. They are disagreeable companions, always talking of the nice law points in their cases, and had their number been great, they would have not been so marked. We know of one fortunate undividual, whose whole soul was engross in lawsuits, acts, and precedents. Poor fellow, he dead, we do not know, what he is doing in the other world. He used to talk to himself, and fancied that his case was being argued, by his counsel before the hakim, he being himself his own counsel. His habit was, while he walked, first to argue the cause of the other party and then to give an answer point b point. The bystanders, enjoyed the joke b he took no notice of them until the Judgement wa not passed. After the hearing over he pronounce the order which suited his interest best "decree "dismiss" in solemn tones and his illusion w pelled immediately. Of such men we do not such men are rareties, and no amount of legislatic. can cure them of their monomania.

Mr. Hobhouse founds his charge against the people of Bengal upon the fact that they do not care to spend a great deal of money for a suit of small value. We can compare such men with gamblers.) They do not care to stake a sum to recover another. Gambler are no doubt led by a passion but their chances of of success and failure are equal. If this chance could be lessened the passion would be weakened gradually, and if the chance could be removed at once, the passsic would be extinguished altogether. (Now does Mr. Ho house think that the chances in special appeals very small? Do not these numerous suitors ofti times gain in the High Court which they had I' in the lower? If such had not been the case a still the suitors preferred to ruin themselves, that would be no doubt a case of insanity or passion Passion blinds, overpowers and maddens one so as to compel him to take steps against his own interest. A man of passion cannot see his own interest, he is urged on by a strong feeling and does not care whether he injures or serves his interest. But in the case of appellants, it is only keen interest which leads them on, and there is quite a chance before them to gain back the case. Under such circumstances the fault is not in the suitors but the constitution of our Courts. Lesson the chances of success in the High Court and this so-called passion of our countrymen for special appeals will vanish also. Why the Judges of the High Court so often differ from those of the lower Court? Who enjoys greater confidence, the High Court or Lower Court Judges? Who are authorities in law points? Constitute the Courts, both High and lower so that they may not so often differ from each other. Improve your Lower Courts and thereby lesson the chances of success in appeals. The people are not so foolish that they love appeals for appeal's sake alone, that they bear a disinter sted love for appeals; it is because appeals oftentimes help them that they feign an affection for them. The day appeals fail to help them, the people will threw their affection for appeals away. In England the Judges are experienced, the barristers clever and the Courts are so constituted that law is no so uncertain there, as here. We repeat let Lower Courts be improved and the number of peals will be naturally reduced without the he legislation. Let our time honored panel

বিজ্ঞাপন। गान देव दमा अगढ

# मर्थाण हिक्श्म।

ज्ञीय मश्कत्।

लि। 1/० जाना, एक माखन /० जाना। किनकां जा गोजांत পতिका जोक्टिंग প्राथवा। नशम मृल পুস্তক বিজেতা দিগকে শত করা ২০ টাকা হারে टम ७ য় १ य श ।

इंग्रिकिटि भाषात्र आमिम (न ७ योनी विजा-তক হাজার আটি শত তেয়াত্ব সালের ৩৯১ রের মোকদ্দমা, যাহাতে দেখ আরাটুন আপকার, শি আরাটুন আপকার ও আলেক্জণ্ডার আরা-वाशकांत्र, माकौनांन् कलिकां छा, वानीशंव धवर नक लोल पोम ७ नकलोल पाम माकिनान महत লকাভার শোভাবাজার, প্রতিবাদীদ্বয়, উক্ত মোক-ায় এক হাজার আট শত তেয়াত্ব সালের এক-भ जूनारे जातिथत जिन्नी जन्मात छेक जान ल-क दिशकि द्वीत माद्श्व आशोगी छे। जिल्ल आशि नि অপরাহ তিন ঘটকার সময় আদালত গৃহস্তি ज तिषिद्वीत मार्ट्रवत मीलाय घरत निम निथिड शिंखिः निग्धशहे विक्शं कहिएवन यथाः—

े नश्लाणे। मङ्ब कलिकां जांत विण्डला श्रीणे श्रिड दिक एल नर वर्ग,न एक नर एक ला इसक निर्मिত वमि जिवित पत्रवस्त इकूक मद्भि छ छ मः -গ্রা ও দখলী ভূমিখণু, ষে ভূমির কতকাংশের উপর क्रियेह स्थित आहि। ऐक क्रियं श्रियोध वियानिक जां हे कार्रा। ऐक जियत मीयाना ऐखत र्वावत डाड़ाडिया वाडी, मिक्टिश वड़डला डीड मत्रकाति ताञा, शृद्ध यूगल वायूत छजामन हैशा वाही उ कड़कार्ट वर्गीशत मिल्लित छाट्रा-

ইয়া বাটা। २ नः लाउ । দরমাহাটা অথবা সহর কলিকা-তার শোভাবাজার ফীট স্থিত ৫৪ নং দোতালা इसेक निमां ज वमिंज वाणी यांश मखाजि निम्जि দখলী ভূমি খণ্ড, যে ভূমির কতকাংশের উপর উক্ত হ স্থাপিত আছে। উক্ত ভূমির পরিমাণ, আহু-गानिक खोल काठी जिया छेक जिया मीयाना, छेखदा गृज तांग क्रक मारमत जाड़ा छिया वाछी, शृद्ध इत्रह छ মল্লিকের ভাড়াটিয়া জ্যি, দক্ষিণে শোভাবাজার छि छ नागक मतकाती तान्हा उ शक्टिंग वनन ठम মিত্রের ভাড়াটিয়া জমি।

७न १ ला छ। महत क लिका जात पत्रभाश्यो छि ह न्धिक मात्वक ५७ ! ३ नः वर्जगान ३५८नः धवः वर्जः इंग्रेक निर्मिण यमिण वाणित मत वस इक्क मार्गण তৎ সংলগ্ন ও দখলী ভূমিখও, যে ভূমির ক-তকা শের উপর উক্ত গৃহ স্থাপিত আছে। উক্ত जियित शितियां । जन्मिनिक मण काठा । डेक जियित में गांगा, छेख ,त क्षंब गंगी मामीत डांड़ा छिता। जिम मिक्टिश महातिम माश्रत उपामन वाति, शृद्ध मृड व्यान-मत्यांश्न यक्षिकत डांडांडिया जिय अ शिन्हिय विश्रामाम (मज ভाषािक्या वाना।

. (७, क रं तर्भा हेड विनेशित्व साउनि

। आंत द्वन (हम्रात्म রেজিপ্রার।

होडि थंड लिंड गार्ट्। लांकिर डिक क किंन नांडिक ज-जिये ड इहे.न भावमा वा मीता जर्जा जिय कछ थका न करत वत १ ञादनक मभग्न हत्क्त जल्ल जाशितमा यांश। यथन शहे क्रिश कांन नां हेक ज जिनो ज इश धवर গোতারা ক্রমন করিতে আরম্ভ করে তখন এক জন धर्म योज ह थो। नक जूना शांड कतियो नक त्नत निक छे शिया जोशापत ठकू निःश्ठ जाल जुला जिलारेया जला मः था इक द्वन अवद जो इति शद्व जुला निक्र डो देश। अरे চক্ষের জল বোতলের মধ্যে পুরিয়। রাখেন। পারস্য বাসী मिर्शत । १३ तथ विश्वाम (य ७३ ठ.कत जल मरश्विध এবং যখন কোন রোগী মৃত্যু যাত । য় অধীর ও অতিতলা इहेशा शरफ अरश (कांन छेशरध कांन छेशकांत करत ना उथन इंश्र अक विन्नु शान क्राइट्ल (ता भी मजी व इंन-श्रा ऐटि ।

—(वामाहेट मुमलमात्नत्र। जः रमहे প্রাপ্ত হার ऐक्टिएए। मহत्यत मगत्र जाश्चिमा नगात थक जन मून-लगान (मथान कात পোलिम यूर्णातिए छेट छ कि जाक मन करत । (भां । तां । वां मक शामित मामलमां तरक धरे मगश मूमलगा(नद्गा जांक्यं। क्ता धक छन गांमलमाद এক জন মুসলমানকে কঠিন পরিশ্রমের সহিত কারা-ক্রের আভা দেওয়ায় তাহার আত্রায় স্বজন মামলদারের কাছারি আক্রমণ করে এবং মামল-माइटक थखर कित्रशा कार्षिकात छ (मार्ग करता किल (मी-डाशा करम मामलावा श्रिंहिक मश्राम श्रीहेश को छी-क्तिएं शार्त ना। धना मूमलमान जाि। वल ७ एंज क्य का ती न ज न कार्या वार्षि शिक्स, हे स्मित ग्रूर्थ ७ (ভাগে বিলা স गार्श्व थाकिया, देश्यांक यादकात क-ঠোর শাসনে অবস্থিতি করিয়া এখনও এরপ সাহস ও তেজ রক্ষা করা আশত্রা। যদিও রাজ পুরুষ দিগের প্রতি অসদাবংশর করা নিতান্ত অনাায় তথাচ তাহাদের मारम, তেজ ও বীরত্ব দেখিয়া আমাদের তাহাদের छेशत जाति जिंक इत। य मिन्दोनी मिट्रांत थाजि-পশ্চিমে কতকাংশে গুৰুচরণ সেনের ভাড়া- বাদীরা এই রূপ তেজিয়ান তাহারা কি রূপে এ রূপ शैन वीर्या इइन।

— এक জन भ हो। न मूमलमान मिट्रांत्र मच : ऋ धरे क्रि लि-थिशाट्य । यमाथान करा कार्तात न्य कार्त करिय আছে। কিন্ত যে সমুদয় পণিততেরা কোরাণের অর্থ করি-श्राट्डिन डाइ। र टलन डेइ। डि एक ममार्थान करा निविक নহে কিন্ত ভাং, আফিং, চরশা, তামাক প্রভৃতি যাহা-তে लिला इश जाइ। तई रावङ। त कार्यात निविक्त जाए । उर्गित्र । एक १ त जा भाक श्यां ल या रहा त करत न। जिन নদীর অপর পারে মুদলমান ভজনালয়ে তামাক ব্যবহার कत्रो निविज्ञ। यनि তাহাদের শাত্রে योহা निविज्ञ এ तथ (कांन थांना ना थांटक उट्ट मूननमां दनतां অনায়াদে খুফান দিগের সঙ্গে একত আহার করিতে भारत ।

—माधात्रीत निज धक्छ। यञ मः श्वालि इश्वाह्य। मन्श्रीमक এই विषय উপলক্ষে লিখিয়াছেন "সংসারে যে गाञ्चि खी शूज পরিবার পরিবেফিত, তাহাকে যেমন অধিকতর বিশ্বান হয়, অধিকতর বিশ্বাস করা কর্ত্বা, (मई क्रश जा गांदन मांभांक्नी यथन अकरन कन कांद्र-थाना लहेशा जड़ी जूना इहेशा शिष्ट्रन, जथन मकःन इश्टिक जिथिक जिथे नियोग कर्ता कर्जवा।"

— মহারাণী বিক্টবিয়ার মধ্যম বধু মাতা ক্সিয়া রাজ ত্হিতার আগামী নবেম্বর মানে সন্তান প্রস্ব করার मञ्जाबना।

— यमाभाशीरमंत्र भटक अकि छङ मश्यमः! एडलि-निडेटम थक वाङ्कि निथिशाट्य य तडा इइटड अक क्रिय खुक्र श्रुवा श्रुव श्रुवा श्रुवा

—शेत्रज्य (कलांग जाजान जाकांकांके कि इहेट जांत्र अ इरेशोर्छ। এত ডাকাইতি এখানে কখন হয় নাই। निज मिछिटिउ मिन्यम अक्षी छाकारेडि रहेशांशिशांट्र । क्राह्मकेन अंडे क्राह्मिक विश्व कार्या कर्रिया कर्

कित्रिश (इन। इंश्तं नाम (मजत शिक्शिम जंबर लिक्,) किमिमिति (য় वि जि शि देनि कर्म कि ति ( जन।

— (अमिए मि विভाগে भें जिल्हों भेगिन में भारत ক্ত ডিস্পেন্সরি আছে।

— इंडिक शीष्ड स्रान मम्टर शेवर्गिक कर সুচাৰু পূৰ্বক চাউল প্ৰেরণ করিতেছেন ভাঁহার-वक्रें यून्मत म् छो ख वक् थो नि मश्योम शेख श्रेकां-শিত্ হইয়াছে। পোনের মোন চাউল এক খানি গাড়ি বোঝাই করিয়া কোন ছভিক পীড়িত স্থানে রওয়ানা कर्ता इरा। श्वर्णायि (य ममूनारा त्वन वलन जामनानि क्रियाहिन छेश्रा इंग वलन शाफीट यूथा श्रा कंठक मृत शर्या उर्वात शाफि दोनिया लहेया यांय, किस लिय जात (कान करम हिलात ना। छेक श्रांतन जाता कंडक छिल शोड़ी ठांडेल त्यायाई छन्न आमिया डेशश्चि धवर क्षे मकल शोड़ी व वलम छलिछ वथात्न व्यागियां छहे या পড়ে। উক্ত গাড়ী গুলিতেও পনরং মোন করিয়া চাউল (वावाई छिल। वलम छिलिएक घाम थाईएक एम छत्र। इत्र, किन्छ তाङ्ग्रा भनर्गयाण्येत वलम, তाङ्ग्रा याम थाई दव (कन? व्यवस्थिय य ठाउँल छाङ्ग्री छानिया लहेग्री याई टिक्न जांका वे जाका मित्र कि थाई टिक पिछ्या क्या। यथन निर्मि छ छात्न गांडी পीছिल उथन (मथा शिल य वलाएन वा প্রতি গাড়ী হইতে দশ মোন করিয়া চাউল খাইয়া ফেলিয়াছে। পুনরায় চাউল আনিবার নিমিত্ত हेक शाही छिल उर्क्शार क्रियं भाषान इंग्र, किल वलम श्रीलव आश्राद्वत निमिख প্राटंक शर्प होटं भाष মোন করিয়া চাউল দেওয়া হয়, স্তরং প্রত্যেক গাড়ী (वायाई इइया (य अनव (यान कविशा ठाउन जारम তাহা সমুদায় বলদ গণের উদরেই প্রবেশ করে।

—व तिना जिल्ला अलुशं ७ कलम कां हि निशमी बीयुक ठली ठवन उक वाशीन नार्यं शतीकां य मार्या कर इ अशं श धर्म तिकारी म जा कर्न् क जिन अकि दिशेश (गएल প্রাপ্ত হইয়াছেন। ইনি ক্রমান্নয় আজ পাঁচবৎসর धर्म तिकिनी मङ। कर्ज् क शतीिकि इहेग्र। यत्रापति शती-काश श्रथम (खनी एक इहेग्राट्म ।

- श्रा नगद्वत हिन्दू अधिवामी श्रा এक ही श्रक्त मन्त्र ষ্ঠানের তাবতারণা করিয়াছেন। প্রত্যেক গলিতে ইছারা এক একটি সভা স্থাপন করিয়াছেন। সভা সালিসী দারা म सूमां श विवामी श विया निका जि कि तिर्व । भूति भ-क्षार्श्वा (य कार्श करित्जन इंडावा करिश कितिदन कल्लोना कितिएएएक। यिन जागाएनत (मर्म मक्व व शक्षार्य स्वाधिक इय डाइ। इहेल एक स्विष्ठा নয়, লোকে যে মকদমা করিয়া উচ্ছিন্ন যায় তাহাও नियांत्रण इशा अ (मणीशशादणंत्र मकम्म मा क्रिकांत्र बलवजी म्ला इं। निवांत्र क्रा यिन इव इडेम माहित्व मत्ना-भंज इंच्छा थारक, তবে याश्राट आरम जारम अकार्य প্রণালী স্থাপিত হয় তিবি তাহারই চেটা দেখুন, তিনি হাজার দিবিল আপিল বিল প্রচলিত কৰন কিছুতেই किছ इहरव न।।

मधा डेशरवमन कित्रा। वर्ल य मि य श्री छ डेडांब गर्धा ञाविष्ठि क्रित्य जार्ज श्रिष्ठ मिथारन इसि इशे (व ना (ववर ३२ वरमत यिम शांटक जोड़ा इडेल उ त्रिके इइति गा। जातिकई जोङ्गित कथा विश्वाम कित्रिया जा-হাকে নানা বিধ উপহার প্রাদান করিতে লাগিল-विष्ठे तथ कि क्र मिन जार्ष वेशत गर्धा धक मिन तर्दव (मिथिलोग जोकान मस्या পরিপূর্ণ इहेग्रा छेठिशांट्ह, जांत इकी तक। इश न।। इंडाई (मिथिश) तां ज दिन र তে প্রস্থান।

— এक थानि विलाउ मशाम शाब भाग प्रभी स यम् जांकृ मिर्शित अहे तार्थ विवत् श क्रांभिक इहेगार्छ :-

१५०० माटल जामितिका वामी वर्ग्य मामक अक वाङ्कि डाइ। निरादक श्रिमर्भनादर्थ जामित्रकाश नइशा जाहरमन। (म मगग जोहोत्रो जल्ला के तं ले हेश्त्रों जि বলৈতে পারিত, দেখিতে ম্ধামারতির মনুষাাপেক = । তोर्। प्र अक करनत नाम हा १ वड्ट

ইয়া এখানে স্থাপন করত অত্ত প্রজাগণের পরমোকার माधन ककन।

> जनिय এका ख नाथा। बीत्रज्ञ नी का उ वस् ठाकू त्रा।, मिनाज शूर्त।

त्रांगिषाछे-शिव्यांन।

আপনার বিগত ১৯ এ আষাড়ের ২১ সংখ্যক পত্রি-কার প্রেরিভ স্তত্তে 'রাণাঘাট মুনদেফি আদালত ও সেরেন্ডাদার ? শিরোনামাঙ্কিত প্রস্থাবটী পাঠ করিয়া তাত্ত তুঃখিত হইলাম। পত্র প্রেরক সত্য পথ পরি-ত্যাগ করিয়া সেরেস্তাদার মহাশয়ের প্রতি কতক গুলি जयथा (मायाद्रांभ क्रियाट्डन, এই জनाई ইহার প্রতি-योग नो कित्रियो क्यां छ थोकिए भोतिलांग नो। (मत्त्र छो-দার মহাশয় এক জন নিরপরাধ ক্ষক্তরিত্র ভদ্র সন্তান, এবং কাर्या मक्क छेशयुक्त लाक। वर्छ मिवमाविधि जामान-তের কর্মা করায় এক্ষণ যে তিনি সম্যক কর্মিচ হইয়াছেন তাহার আর সংশয় নাই। ভাঁহার বহু কাল কর্ম कतात विषय পত প্রেরক অস্বীকার করেন না। এক कार्या वरू काल नियुक्त थाकिटल তा श्राट मनूया मार्ज वह বিশেষ ব্যুৎপত্তি লাভ হত্য়াই স্বাভাবিক, তবে পত প্রেরক তাহাকে কি জন্য অকর্মণ্য মনে করিয়াছেন व्चिएक প्रविलाग ना। পত তোরক সেরে নার মহা-लारात (मर्वेखा इहेट २ ही निथ इन्तर्भानित विषय योश - निश्वाहिन তोश् मजा नद्द, ठाँश्व (मद्वर्ष) इहेट्ड কখন কোন নথি হারায় নাই। তবে নদিয়ার জজ আদা-লতের মহাফেজ এক বার রাণাঘাটের মুন্সেফি আদা-ल उत्र जर्म मूज। मानित जक्षी नाकी थाजनात निथ चीत्र (मदत्रखात्र ना পाইत्रा डांश्त्र व्यां जिल्ला कदरन। (मद्रिखानांत् मश्राक्षां क्री निर्धि व्यववा वाना-লত হইতে পাচাইয়া দিয়া তাহার রিদদ প্রভৃতি রাখি-शोছिल्निन। জজ मार्ह्य योश्वं श्रीय मश्रिक्ष রিপোর্ট ভিন্ন আর কোন প্রমাণ গ্রহণ করেন नाइ। तीं जियज मिद्रिखानां यश्निद्रित वर्णना लहेशा বিচার হইলে ভাহার নিদেখীতা প্রকংশ হইবার

मञ्जावना ছिल। কোন এক মোকদ্মায় বিনা ওকালত নামায় জনেক हेकिल প্রতিবাদীর পক্ষ সমর্থন করা ও জজ আদালত इइ ७० ७९ मृ जि जे विथा जिया कि राज जामार शेत मেत्रिङ्गानात महालां या जात्रजीत शुर्छ कि कि थिया

न लिथियार्ष्ट्न जोश मजा नर्श । जिन्शि जज শলত হইতে ফেরত আশিবশর পুরেই (নিখ প্রেরণ मगरत्र) (मरत्र छो मात्र महा नात्र ध जून ही धतित्र। ध तिरिंगा है দেন, এবং তদনুযায়ী ভূত পূর্বে মুনদেক বাবু হরি মোহন ज्वर्डी महागंश विठात कतिया डेकील करे पाषी श्व রন। উকীলও তাহা স্বীকার পূর্বক ভতন

লেত নামা দেন। এ অবস্থায় তাঁহাকে দোষী করি-

ভাহার কোভ রাখিবার আর স্থান থাকে না। ভাষার কৃষ্টিয়ায় বদলী হওয়ার কথাও জনপ্রবাদ गांव, তাহাতে विश्वाम कहा दुिक्त गांद्र न कार्या नट्ट। वन लि इउशांत कथा महा इहेल कृषिशांत माद्यानांत कि ভাষা আদালতের মুনদেফ কখনই নিশ্চিত্ত থাকিতেন ना, এवर जारा रहेतन अवनाई এउ मिन अवठा जामा-। ৬ত তুকুম উপস্থিত হইত। পতা প্রেরক তাবশৈষে এক-ার জমাওয়াদিল বাকীর কয়েক ফর্দের পরিবর্তন ও শ্রীহা তাহার জেম্বায় থাকা যে লিখিয়াছেন তাহা मन्भार्थ जमजा। य जमाध्यामिन नाकी व शोनयोगा কথা উপস্থিত হইয়াছে তাহা কখনই ভাহার জেয়ায় ছिल्ना। जोश अथटम मिथित इहेशोहे मूलजुवी निथित गोशिल जाना जांगलांत इट छ ছिल। शत की निश दिजीय মুনদেফি আদালতে বিচারার্থ অপিত হইয়া দেখানে খাকে, ভাহার কিছু কাল গতে উক্ত আদালতে বিচার কালীন তাহার কয়েক ফ র্দার প্রতি সন্দেহ উপস্থিত इरा। (भी नुर्योशी (य कल्त मला जोका पक्ष विन-, यात्र जारवनारका नाई विष्ठात इहेटनई वा ज इहेटवक।

जान। मा जामाना ज (य मकन कार्या भारत छोमाद इ हुना, जारात मायल कार्या जिल्हा नाजित रेश्ता जिना च-मगर हिमाव होश्र, उ निका जि नशि थोस्ड

इंशांट पालिंगामत माश्या ना नर्श पकाकी नि-कां इ करा मखन नरह। याहा इडेक शव (श्राक এक জন নিরপরাধ ব্যক্তির শরীরে আঘাত করিয়া যে সাধা-রণের হঃখের কারণ হইয়াছেন, বলিলে অত্যুক্তি হয় ना। जिनि ऐस भौगिएज तरल लिथनी धित्रा एय প্রকার আক্ষালন করিয়া লিখিয়াছেন তাহাতে তাহার সহিত অপ্রাথার থাকাই অনুমিত হয়। সেরেস্তাদার महानाशक व প्रमिन्छ वातिक कारिनन, दौरात मंड সচ্চরিত্র ভদ্র লোক আদালতের গৃহে অতি অপাই দেখা यात्र। छे एक । वाङ्ग ना कता यि जामान एवत जामना (मत शक्क (माय इत তবেই ভাহাকে দোষী বলিয়া পত প্রেরককে আগনন্দিত করিতে পারিব। ভাঁহার প্রদত্ত इंश जिनि (यम कथनई मत्न न। कर्त्रन।

इन्निष्याहि) বশস্ত্ৰদ १ इं व्यावन बीटे (शिख लोल (शोशोगी। १ काल ५८६८

#### मात्रिजिलि ।

আপনার স্ববিখ্যাত পত্রিকা পাঠে অবগ্ত হইলাম य ' (वर्गातत इर्डिक मन्मी छू उर्हेश जामिट उर्हा वर्षी বড় সুখের বিষয় তার তার সন্দেহ কি। আবার শুনি-लाग य इर्डिक शीष्ठि वाकि मिराने व इश्थ मृत कत्र वार्थ श्वर्गामणे जनशाहिए छोट छाडेल जाममानि कर्त्रशा-ছেন। ইহা আখাদের কম আহলাদের বিষয় নয়। কিন্ত জলপाইछड़ी ডिक्टिक एछेत मधावर्जी इहेगा जामता हेक्ছा क्रम कित्र कित्र जारतन। किन श्वर्णियण्डेत जानू वार्ष्ट्र श्रीज इहेलाम ना, कात्र । कि छू इे (मिशिट अभि ने ना ।

মহাশয়, টাকায় কত সের চাউল বিক্রয় হইলে তोश्रांक इर्डिक वंदल? जामता उ वंशांत निजा उ (म:-छ। लाल ठाउन याश्रांक अथात्म वर्गां वरल, जाई টাকায় /৬ সের করিয়া ক্রয় করিতেছি, তাহাও আবার यिला जात्र, তবে এकि इर्डिक नश ? कर्यक मिनम शंज इडेल छनिश्र हिलोग (य वश्राब महक्राति हा छल जानि-তেছে, प्रान कि इहे पक गाँछ। ठा छेल मात्र জिलिङ मर्भन-छ मिश्रोि इल । किन्छ मि कश्री वर्ष। श्री लिए मे इ छेम्द्र शिल। आवात य ठाउल খतमात्व आमियाद् जारा শুনিলাম যে কেবল পাবলিক ওয়াকের কুলী মজুরে शाहित। ফলতঃ আমাদের আর কোন দিকেই স্থবিধা নাই, কারণ আমরা না পুলিণের লোক, না প্রলিক उशार्कित कूली। ध पिरण जूछ। यमाणि ना इहेज, जाहा इरेल इर्डिक या कि जीवन मूर्जि धावन कविज, जारा - वावाक । ভূটারও দর কম নয়, যে ভুট। গত বৎসর ১॥० छोका यन काश करिया ছिलाय जांज था। छोका इरेशाएछ। এতেও গবর্ণমেণ্টের আমাদের উপর রূপাদৃষ্টি নাই। स्थित स्थान को न मार्थ के का को निवास को नोडे करोड़

श्वर्गराधित निक्छे व्यापादमत धई धार्थना, रचन क्रिशा कुना विভवन कित्रा वाव धूरे जिन मारमेव छेनायुक ठा छेल । शर्वा जाशा विषय जा मार्गिन क्रिया, मीन प्रशिथानत इः भ त करतन। नजुना जनाशात थान याहेवात সম্ভাবনা।

मार्जाजनिश्। बीठ्रः---এক জন পাঠক।

পত্র প্রেরকের প্রতি।

জ্রীরোজনী কান্ত দেন রুফ্ত নগার্স—ম্প্রি কতক छिलि हिन्म, अ गुमलमान अवक छि का छत इहेव। विलि- । ফের কোন প্রধান কর্মা কর্তার নিকট সামান্য দফাদারি कर्ण्यत थोर्थना करतं किछ कर्म कर्छ। महागत याध-कोश्नां यूमलयांन नियुक्त कर्त्वन। धथन यूमलयां निवा जां मादित जाना नट्ड। हिन्छ, यूमलमादन यां हाट मदना বিচ্ছেদ না হয় এখন দে রূপ করা কামাদের নিতান্ত কৰ্ত্তব্য।

वां एक साथ मूर्थां भाषा ग्रांश—२५ (म তां विर्थंत পতিকায় হিন্দু শব্দের উৎপত্তি সমকে বে শ্লোক প্রকা শিত হইয়াছিল তাহা কোন্ শান্তের কোন্ অধ্যায় इहेट छाछ इउया शियाट जिल्लाख इहेगाट न।

— ' পরিভাম বারি সিঞ্চনে মন রক্ষ যে সকল ফল উৎপন্ন क्रिशिं जिय (धा इरेज अक्षि महा गरिय इरिंख जर्भन कितिलाभ ( তार्याभा इहेल्ल महालेखत निक्छे नरह) ইश्टिनि ज्व कि विश्व कि । विश्व कि शिव कि भिवा कि भिवा कि গংক একটি পদ্য উপহার দিয়াছেন। আমরা ফল আহা-রী নহি এটি তিনি নিরামিস ভোজা ফলাহারির নিকট প্রেরণ করিবেন।

আমাদিগকে তাহার মন রক্ষ উৎপন্ন আর একটা ফল প্রেরণ করিয়াছেন। এটাও আমরণ গ্রহণ করিতে পা রিলাম না। তিনি যদি প্রকৃত আমাদিগের বাধ্য করিতে यान তবে मन इटक्षत कल ना পाठाईश। (कान পार्शित इत्कत कल शोठाइतन। जाभाष्मत निकं शोर्थित इत्कत ফল অধিক প্রিয়।

ঞীজামালপুর —লিখিয়াছেন যে ডুনা সাহেব ও তাহার मেরে তাদারকে কত গুলি কুচকী বাজালিতে নিনাবাদ করিয়া লিখিতেছেন কিন্তু প্রকৃত তাহারা অতি উত্তম (नांक।

ত্রীকেদার নাথ সাহা পাবনা—মাপ ককন আর কাজ নাই।

#### विख्वां शन।

वित्रभान (लान जािकम निगिरिष्ठ । जुन थन २०००० होका, श्रांड जा रामात मृला २० होका, ৩०० जार भ विक्य जाविभाग्ने जाराष्ट्र याद्य

बीशांशीलांन बांश वि, धन 

### ञाग्र नाथना हेक।

बीक्रक्षचन्म तांश প्राणीज, मूना ३ होका एक . यो यूल । व्याना। रहेगान होता एक्षम, शहल छोन्ना उ वरेखनात श्रुकानारा थाथवा।

हेशंत जुलना उ वर्गना छ नि जिं जिं जू मत इंदेशिष्ट्। देशां ज्ञानक भूजन जादे जार्ष লেখার বিলক্ষণ কারিগারি আছে।

অমৃত বাজার পত্রিকা।

आंगांदमत विद्यानां या वाक्ना ভाষां ना हैक আকারে যে সকল পুস্তক প্রকাশ হইয়াছে এ খানি मर्का शिका छे० करे। यूलंड मगां वाता

न টকে আনািগোর নিভান্ত অকচি হই शांटि । िख धरे नाहिक थानि शिंडि जात्य-कतिशा (मिथलांग ७ थानि जाशार्ग न, हेक मल थिविके नर्ह। ऐशेमा छिनि सुमङ्ग । उ सुमः नर् रुरेशां ছে। नाशक প্রতিনায়কের চরিত্র অভি স্থনর क्राली वर्गिक इंद्रोहि। त्मांग श्रिकांण।

ইহার উপায়া ও উদাহরণ—ক্র-গত इहेशाएइ। यनुरा खड़ाव स्मत तथ वर्षिड-इरेशां ছে। लिथक यमिछ नू जन किन्छ शण्या बहान ও উপায়ুক্ত ভাষা প্রায়োগে ভূতন বোধ হয় না। एका श्रकान।

#### वांकव। -

यामिक शब उ मयादनां हम। तर्यन २८ श्री। कटलरत । किथिय दौर्षिक मूल्य ३ छ।का छाक माण्ल ले । श्राह्म श्री निम्न किंका ना श्राह्म निम्न विकास । बीकाली श्रमन (पाच ঢাকা বান্ধব कार्यालय

## वाशिद्वा डेग्रामिनी। नाउक ।

मूला १०/० इश जाना। एकिया छल /० अक जाना व्यम्बदाङ्गात शिक्ति व्यक्तिम् व्यक्तिम्, शांवनात व्यव्यक्ति ठां छ । जा इत इति श्रुव की युक वाव इति गांथ विश्वारम निक्छे धवर वांग्रालियांग खीगुक वांक हांग क्यांत शाद्यत निक छ शाश्वा

एक्कि अई शिविको कि निका छ। यो यो बाबा ब यो निका छ छ छ। है ट्यांत शिनां २ मंश्राष्टि इहेट थाजि त्रहण्याज्यादत क्षित्रका कर्य कर्य श्रिका हिंद है।

प्र शिविका

য়াছে। ইহার উপর ধুমকেতুর উদয়। লোকের লোক আদিয়া হতি শাবককে গ্রত করিয়া জাহাজে ধুমকেতু দেখিয়া প্রাণ উড়িয়া গিয়াছে। উত্তর পশ্চিম অঞ্চলে উত্তম শাস্য হইয়াছে সূত্রাং তাহা দের ছভি- --লা সেট পাত্তিকা বলেন যে ডাক্তার তাক্ত্রার্থ युक्त इहेरिय। क्रिनिश मिरिशेत श्रेक्ठ यमि ভারতবংর্বর প্রতি লোভ হইয়া থাকে তবে গণকদিগের গণনা शाहिए छ अभारत।

— गानिला नामक श्रांत देश इद्ध तम निहर्ग कित्रा तमन्या मण छिल (किलिय़। (मय्ना। जार्या मण छिल हुन क्रिया जलिमिक क्रिय धवर पछ जलिमिक रहेश केम रगत नाग्र इहेल छेर्। प्रांता काग्रज शख्य करता हेर्राट जाँच কাগজ প্রস্তুত হয়। এ দেশে যদি কোন উদ্যোগী পুরুষ। छेरमाही थारकन ভবে ইহার পরীক্ষা করন না কেন?

— गाला जित এक जन भ छोन श्राम श्राम হইয়াছে। দে তাহার পরিচিত ব্যক্তি দিগের দিয়ার প্রেছণ করিতেছে এরং সে কেন এরপ করে, জিজাসা क्तिल छेख्त (मश (य প्रत्यश्त्रत व मगुश म त्वातं थ्राश्-জন इहेशाएए। अहे वाङ्गिक अक मिन ताखाए थ, छोन धर्म मश्कां । भाग প্रভৃতি করিতে দেখা যায় এবং ज्ञात्मक ल्लांक जाङ् त हाति मित्क मश्शृशिक इय। मহमा (म भाग वन्म करिय़ा मश्शृही व वाकि मिभःक मादिङ जावङ कर्व। मादिकांत ममत्र मि विलिङ थारक य याद्या इकम कः त जाद्य मिगटक माछि ए उर्गत निमिल (मनाइंश) जांदारक পाठाईश। पिशार्छन। किल সে এক পুতরাং সকলে পড়িয়া তাহাকে প্রহার করিতে नित्य कर्त अरः रिवंदिय स्म श्राम्य कर्त ।

—माग्य (मर्ल इंखित शृंजा इय़। गंड ३५३ (म जांत्रिथ) শ্যামের রাজা তাহার কয়েকটা হস্তিকে উপাধি প্র करत्न। अहे छेश्राधि श्रामान काल याश युख्य इरा। श्रद्धा-हिट्ड भीड वमन श्रिशान शुक्त क मञ्ज शांठ कर बन धवर त्रोका स्राः रिष्ठिमिश्क छेशांश छालान करतंन। छे-भाषि श्रामान कार्य। ममाथा इरेशा (शटन तांजा तांजा প্রসাদ স্থরূপ হস্তি দিগকে ইকু দণ্ড প্রদান করেন।

— शवर्वत (জनादतम ८४। আशय किनकां जो পরিত্যাগ क्रिया (भाषानम शरिमर्भन क्रिय्न। जोश्व श्र मिन एका लिहिट्वन, ७३ जो एक एक मिन्स लिवि इ: दि। वहें जितिथ जिन को छो छ यो जो कित यन। सिथारन १० में जिम्हार के के के का का 1923 का कि जिल्ला कि जिल्ला कि कि लिए के कि जिल्ला के के कि कि लिए के कि जिल्ला के के कि कि लिए कि

রহদাকার ছিল। এবং অপেকারত বুদ্ধি মান তাহার হু এই ঘণ্টা পরে য়া স্বর মৃত্যু হয়। তাহা- সকল হস্তি রক্ষিত হয় তলাধ্য হইতে একটা হস্তি ছিল। তবে দুই জনই কিছু জানিত না। তাহাদের দের সন্তান সন্ততির কেহ কেহ স্কুলে পড়িতেছে এবং শাবক গত রহস্পতি বাবে শিকল ভান্ধিয়া পলায়ন —গত ছভিক্রে নিমিত্ত লোকে অত্যন্ত ভীত অনেক চেষ্টা করে, কিন্তু সে ছুটিয়া ইডেন গাডেন হইয়া পড়িয়াছে। আবার এবৎসরের শস্যের অবস্থা প্রবেশ করে এং সেখানকার অনেক গুলি ফুলের যেরপ তাহাতে অনেকের এখনই শঙ্কার উদয় হই- গাছ ভাঙ্গিয়া ফেলে। ওয়াটার লুর থানার কতক গুলি उठाईशा (मग्रा

কের ভয় নাই। সেখানে গণকেরা ধূমকেতু দেখিয়া একটা মলম দারা কুফ রোগ আরোগ্য করিতেছেন। গণনা করিতেছে যে, ভারতবর্ষে এই বসংরের মধ্যে বারথলোমিউ ছন্পিটালে এক ব্যক্তি এই ভয়ঙ্কর রোগা ष्ठात्रा वाकाल इहेश वाश्यम कः त अर छाङ्गित वाहाक প্রায় আরোগা করিয়াছেন। উক্ত মলমের প্রধান हिशकत्व जानमामान दीश शुरु शांख्या यांत्र धार उर्राक खर्जान वला।

## (छातिज श्वा

मिनां जिथुत वीत्रशंख (त छिन्ने वो विम्म।

সম্পাদক মহাশয়, কয়েক মাস অতীত হইল এই দিনাজপুর জেলার অন্তঃপাতী বীরগঞ্জ চেকিতি একটা मव (त्रक्राधेती व्याकिम् मश्चािषठ इहेग्राट्य। वहे (कालात भीमा छेल्दांश्टमं প্রায় ৬०। १० माईल প্রান্ত বিস্তৃত। জেলার রেজেফরি আফিস ব্যতীত মফসলে এরপ কোন রেজেয়ेরী আফিস নাই যে যাহাতে রেজেয়রী 'कार्या मन्भन्न इहेट भारत। गुड्याः मामाना अक थान वलील (इट्डियोदी कर्ता जावगाक श्रेट्ल, ध्रेड मिन ट्डिलां छेखत প্রান্তবর্ত্তী লোকদিগতে বাধা হইরা ৬০।৭০ মাইল অতিক্র পুর্বক জেলায় না আসিলে উপায়ান্তর ছিল ना। शवर्षिण जाजा मका माधावन श्राक्षावरमाव क्रिय निवांत्र ऐएम्ट्रिश वीत्रशेख छिकि एवं मव दिखा हो । जा किम श्रांशेन कित्रां एक्न। এই श्रांनिती (जानां इहें एक ) न माहेल इतवर्डी। वीतशास्त्रत १५ माहेल जल्दत ठातून गा नांमक जात धकि (ठोकी जार्ड, इंडि शूर्य जामारमत ভরদা ছিল যে আফিদটী এই ঠাকুর আমেতেই र्धार्थिङ इंड्रिंग, कार्य चीत्रशिक्ष, शित्रशिक्ष, धार्-त शौ वालिमङ किल এই চারি थानात এলাকা लहेश। डेक जाकिमी अधिष्ठं इहेग्राह्य वहे छाति थानाग প্রায় মধাবতী স্থানে চাকুর গা স্থাপিত ভিলেষতঃ এ স্থান হইতে জেলায় অথবা বীরগাঞ্জে যাইতে হইতে नाम ल मगकोर्ग প्रांगनगत नागक करें ক্রম করিয়া যাইতে হয়। আর বাহারা এক বার भीगा इरेट जाहरम. जिश्लिक थाय ४० महिल প্রাটন করিয়া আদিতে হয়। যাহার। ৫০ মাই वामिट्ड शाःत जाश्रामत जात्र ३१। ३७ महिल श অমণ করা ষে তত কটে কর নহে তাহা গ

वरे ठाकूत गाँ(तव जाकिमी शांशिक रहेल काश्रावरे क्रिन उक्षित मश्राकित्व स्रामा, कार्य श्वानी यथन धलाकात मधाष्ट उथन ठडूं शोधिष (लार्टर সহজেই এখানে অাগমন করিতে পারে, আর যাহ জেলার নিকটে আছে তাহার। অনায়াদেই জেল রেজেন্টরির কার্যা সম্পন্ন করিতে সক্ষম। সম্প वी तशक जाकितम (य मकल मलील (तर जिस्ती इस जाइ मश्था। ধরিয়া দেখিলে এই চাকুর গাঁয়েরই অধিকাং मलील मे मे इहरव। अ ऋत्ल मन (इर जिसे हो जाकिम স্পাধনের উপযুক্ত ভূরি ভূরি কারণ থাকা সভেত (य. (कब शाशिक इहेन ना काहांत्र गृष् कार्शिश जा! गर्वा किছू इ वृत्रिएंड शांतिएंड हि न।। यपि थेडांशिएंत करिशा माधनहे जांकिम खांशिन याशिन मूर्थां एकाना इग्र ত'বে যে ঠাকুর গাঁরে আফিদ স্থাপন অত্যাবশাক, इंडा (वाध इश मक्टलई युक्क कर्छ स्वीकांत कतिरवन) ज्यागता थागरे (मिथिटिक यि मामाना धक थाना मली द्रिष्डा कि विद्रिष्ठ इरेट्नि यर्थि करे कि कि जि कित्रिक इहेट उद्धां अञ्जा श्वर्ग श्वर्ग कि

উত্ম লেখা পড়া শিখিয়াছে। সোমান্য হুম্ভামি করা ভিন্ন অন্য কোন বুদ্ধির চিহ্ন দেখা যাইত না 1 চ্যাং বলবান ছিল তাহার अलाव थकूल किल, ग्राप्ट भीड़िंड, उ किकिट्ड ছिल धेवर त्रांख मिन जोधांत मूथ कतित्रा थाकिछ। धक দিন রাত্তে তাহার শায়ন গৃহ হইতে কি শাদ শুনা যায়। ष्वांत খुलिशा मकल्ल शिशा (मर्थन (य इहे जांडां ड क्षनश युक्त व्यात्रेख इहेश हार शाश्ति किंठ किंत्रिश किलिश वूटक विभिन्न। शिला ठालिना धित्राट्। वर्गम माट्डव তাহাদিগকে পরিদর্শন করাইতেন এই নিমিত্ত তাহারা मुखार्ड २०० मंड होका (वडन शाईड। इंडा डांडा-রা তুই ভাতায় সমান তাংশ করিয়া লইত এবং খরচ बादम यां रा था किं जारा दिश्म वादिश मक्षेत्र कित्रा শখিত। তাহারা কখন বাড়ী যাইত না, পরিবারের था जाहाता मत्न कतिज ना। गांश शीष्ठ इहेल ত্যাং তাহাকে সেবা শুক্রা করিত কিন্ত বোধ হয় তা-তার প্রতি স্বেহ বশতঃ তাহার প্রতি যত্ন করিত ना। धक जरनत शिषा इहेल जाशरतत शीषा इहेगात স্হাবনা ছিল স্তরাং শুদ্ধ স্থার্থের নিমিত্ত ভাতাকে আবোগা করিবার ষত্ন করিত। চ্যাং একটু আংমাদ প্রিয় ছিল এবং কোন প্রশ্ন করিলে বুদ্ধিমানের মত উত্তর দিত। তাহারা বর্মের নিকট ৫ বংসর ছিল এবং এই ৫ বংসর হইতে তাহাদের অজ্ঞাতসারে মূল্যান দ্ব্যাদি তাহারা ৮০ হাজার টাকা সঞ্চয় করে। সেখান হইতে তাহার! উত্তর কারোলিনার গমন করে। সেখানে তাহারা হুইটা আবাদ জয় ও বিহাহ করে। তাহারা निट्जित नाम शतिवर्जन कित्रश वक्षात त्राट्थ। यथन বিবাহ করে তখন তাহাদের বয়স ৪৪ বৎসর। তাহারা छुडे जन त्ममत्क विवाह करता इंहाता छुडे जन मरहामता, धक छात्वत्र वर्म २५ धवर धक छात्वत्र वर्मम २५ दर्मत् । হুই ভাতার আবাদ স্বতন্ত্র ছিল, গৃহ হুই স্থানে ছিল! इरे जारे श्रक तर्भ जावारात काज कर्म क्रिज। ज्र কোন গুৰুত্ব বিষয় সম্বন্ধে কোন বিষয় সাব্যস্ত করিতে इहें ल छा १ जहां व भी मारमा करिं । এक এक मिलाइ একং ভাতা তাহার গৃহে অবস্থিত করিয়া নিজের কাজ কর্ম দেখিত, তাপর ভাতা সে এক সপ্তাহ তাহার বাটা বাধ্য হইয়া থাকিত কিন্ত কোন বিষয়ে হস্তক্ষেপ করিত ना। ভাগ দিগের পরস্পার ঐক্যতা ছিল এবং সময়ং এ-ज्ञभ विवाम इइंड (य প्रज्ञाद्वज्ञ युथ (मश्प्रमिश वन् इइंछ। ठाएक व थ्यम श्रुव त्यारा इय। ठाएक व छ्यंछी ध्वर शार्षा कर भाष श्व कना। इस । इस्त मर्था ठाति जन विश्व ७ (वावा इय़। जां हे जन वर्जमान जां : इ। (जार्क) कनाति वयम ১१ वर्मत धवर जारात विवाह रहेगाटि । তাহারা তাহাদের দাস দিগের প্রতি যে রূপ অত্যাচার क्षे कार्य किंव - कार्य मार्ट्य वर्ग किंद-

তেन कि ना मल्पर। আমিরিকায় দাস ব্যবসায় ऐ গিয়া তাহার। ভারি ক্তি এন্ত হয়। তাহার। এই निमिन जार्वात शित्रमर्गन मात्रा जर्श देशांबन कतिए श्वर्ष इया जाइन्य यज सम इरेट जानिन जजरे अधिक हिक्टिए इइ.७ लोशिन ध्यश जांगार अधिक वियोग इइ जिलाशिल। जो श्रांता ये इक इइ जिलाशि-ल তত এই ভয়ে অবিভূত হইতে লাগিল যে এক জনের मुका इहेल जाशदात मुका इहेर थ थ १ ५ वह जिस् जो होता मिन मिन अधिक विकिए। इहेट लाशिल। वटक ममा, थ দিক হইতে এক হন্ত পরিমাণ একটা মাংসের রজু নির্গত क्हेशा जाहारमत शहम्भात्क जावक करता अहे तब्बु हो शुई इंक शितिमत धवर गिति इंक श्रेक। विनित्न जात्नकं मूत लमा इइंछ। छाङाता जात्नक वात इंइ। (इमन कतिया) शुशक इहेवांत निभिन्न छेटमार्ग करत किन्छ हेन्द्रांटशत श्रभागर हिक्टिमरकत्रा शतीका कतिया रतनम य क्रीक्रीटमत मश्ट्यांश तब्जू. (इमन करित्न जोक्रीटमत मृद्र क्रेट्रा धक वात छेश ছেएन कतिवात अভिछात्स धरे ब्रज्यू दीशिश डिश्रंब ब्रज्य हलाहल वन्म क्रा श्रा किन्छ व बट्डिव गांड जारदाध इहेग्राट्ड जांत गांश जाटें जना इरेशो मृजा यह इरेशो পড়িয়াছে। অতরাং বন্ধন খুলিয়া मिशा जार्शन थान नका कित्र इस। जाराटमन ५० वर-अस रशाम गुज़ा इस । हिएएम्स धार्थम गुज़ा इस धार्थ

যাত্রা করিবেন। ১০ই তারিখে ঐহট পরিত্যাগ করিয়া গণ সহজেই বুঝিতে পারেন, ৩৫৭ শণা শাংত কাছাড় উপস্থিত হইবেন। কাছাড় হইতে ১৬ই তারিখে যে, সে একটুকু স্মবিধা হয় তাহাই পরম লাভ। लिल श्याहेत्वन । २८ व जा तिर्थ लिल १ পরি জাগ করিয়া २ ৯ এ তারিখে কলিকাতায় প্রত্যাবত্তন করিবেন।

— माल्मार्ज ३৮१२ थ् । जात्म मकम मात्र निमिन जाए। हे কোর টাকা ব্যয় হয় এবং গত রৎসর ইছা অপেক। व्यादत्र। २० लक्क छोकात व्यक्षिक याग्न रूहेबाट्ड। धारे २९० लक छोकां व अञ्चन २०० लक छोका अञ्चलभाव है देशनए ७ शमन क्रिशांट्ड।

– এ,বৎসর মহাতে প্রায় ১৬০ হাজার মুনলমান यां जी शमन करियराट्य। इथ यः जा ऐशनटक श्रीटिं ए० श्राजात यांची शयन कहियां ए ।

-- খुड, को छ। नागक । धकछी (जल धक जन नत्र छ।। ञाभाराधि यावजीवन काराजक इहेश ञाविष्ठि करिए एए, इंश्र २० वर्मत कोरावाम इंग्री शियाद किछ (य वािक्ति (म इजा। कर्तात जाशता प मण अञ् इत (म वंश्विक जीविज जांद्य। एम-१५ मन्द्रात शत्क ध्रम अविष्ठात मा इउग्रे जांक र्। किछ इंश जानिशः खिनिया वाद्यता मछ वि. ध जादिन व करिं ते जात मार्थ ভাহারা কি ভয়ানক লোক।

— विवादि गार्ठाहेगात, निमिल गोर्डिन दिए यि। मिनिस्स वहे धार्थन है विवास विवास है है कि वाकिमी